

# PRESS & MEDIA



**CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE,**  
**ROORKEE, UTTARAKHAND**





# भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया

● जनवाणी संवाददाता, रुड़की

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के



तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और रक्षात्मकता के साथ तालमेल पर जोर दिया।

कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. आशीष पिपल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के

विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेट्रोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने

**पर्यावरणीय व सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया**

साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेट्रोफिटिंग

रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. थपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय, राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित रहे।

## पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

○ इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं ○ सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियाँ, अवसर और चुनौतियाँ विषय पर व्याख्यान दिया

**प्रधान टाइटिल**

**नई दिल्ली।** सीएसआईआर-सीबीआर के अग्रणी अनुसंधान संस्थान, न्यूदेली ने 28-30 जनवरी 2026 को पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं समाजिक आयोग पर एशिया एवं दक्षिण-पश्चिम एशिया के एशियाई एवं अरब प्रौद्योगिकी उद्योगिक मंडल (एशियाईआईटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, इसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया।

इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलैसेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टल का दौरा किया, जहाँ सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित नवीन, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों की प्रस्तुति किया गया। उन्होंने स्टल पर प्रदर्शित सीएसआईआर-सीबीआर के अग्रणी वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह के अध्यक्षता में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और सम्मेलन के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिक्रिया और टिकाऊ अवसर-चक्र से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और सोध



कार्यों में संघि दिखाई। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एन. कलैसेल्वी ने उद्घाटन सत्र की शीर्षकों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और अवसरों के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दृष्टि में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्य को उन्नत और व्यावहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके।

तकनीकी कार्य-क्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने 'जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियाँ: अवसर और चुनौतियाँ' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, भवनों और अवसर-चक्रों को योजना बनाने, उनको खोले करने और उनके प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्य और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

सम्मेलन की आयोजनी ने विभाग-आधारित अवसर, जलवायु-अनुकूल बुद्धिमत्ता सोध, सतत प्रयोगशाला और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास स्थलों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका तालमेल और मजबूत हुआ।



रुड़की के सीबीआरआई के नवाचार को नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन में सराहना मिली। • हिन्दुस्तान

## भवनों की बेहतर योजना बना सकेंगे

रुड़की। नई दिल्ली के पृथ्वी भवन में आयोजित तीन दिवसीय प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन 2.0 में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के नवाचार आकर्षण का केंद्र रहे। संस्थान ने भविष्य की निर्माण चुनौतियों, विशेषकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी अत्याधुनिक और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन किया।

किया गया।

राशि सौंप दी जाए।

सुविधाएं रूप में उनके लिए वे संचालित कराए जाएं।

मिलने वाली की देखभाल करने का विचार के कार्यवाही।

**टेक्नोलॉजी**

**सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन**

**जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत**

**सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार**

राज्य, 28 जनवरी (अमित) : सीबीआरआई-नैटवर्क भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन 2.0 के दौरान स्टॉल में नवाचार प्रदर्शन किया। यह सम्मेलन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (सीबीआरआई) लक्ष्मीनारायण राय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

प्रदर्शन पर उपस्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान संस्थान (एनएसआई) डॉ. निरंजन सिंह ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का निरीक्षण कर वैज्ञानिकों से संवाद किया।

और जलवायु परिवर्तन से निपटने में संस्थान की तकनीकों और विशेष प्रयासों की सराहना की। उपस्थित पर में सीबीआरआई की स्थापना एवं सीबीआरआई की भविष्यदेय डॉ. एन.

कार्यक्रम में कहा कि जलवायु परिवर्तन और अणुशक्ति से निपटने में उन्नत तकनीकों तथा उन्नत बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है। उन्होंने अनुसंधान की आवश्यकता और उपस्थित प्रदर्शनों पर बताने का अवसर। सीबीआरआई ने भवन विज्ञान एवं विज्ञान क्षेत्र में नए नवाचार प्रदर्शित किए, जिसमें नैसर्गिक-नी के तहत निर्माण 3D-मॉडल शामिल है, जिसमें विज्ञान, जल-नी, ब्याट ऑन संचालन, रीजिस्ट्रार विज्ञान विभाग, और सीबीआरआई का संयोजन प्रदर्शन तथा डिजाइन टैबल तकनीक प्रदर्शित की।

संस्थान की पर में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेश कुमार सिंह ने बताया कि इनमें की योजना, जल और प्रदर्शन में बुद्धिमत्ता के उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने तक किया जा सकता है।



# पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

नागरिक व्यूरो

रुड़की। सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक एवं खनिजिक अखण्ड पर एशिया एंड पैसिफिक (यूएन-एसपीएपी) के एशियाई एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तोत्तरण केंद्र (एपीसीटीसी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, उसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं



सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलेमेल्वी भी उपस्थित रही। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलेमेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया, जहाँ सीएसआईआर/एशियाई/डीएसआईआर द्वारा

भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित नवीन, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित पीएमएवाई-जी के अंतर्गत विकसित उडी-प्रिंटेड ग्रामीण मकान और जिंग-जेन ईट

भट्टा तकनीक जैसे मॉडलों का अवलोकन किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिक्रिया और टिकाऊ अवसंरचना से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और शोध कार्यों में रुचि दिखाई।

उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एन. कलेमेल्वी ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और आपदाओं के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दिशा में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अहम बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्यों को उपयोगी और व्यवहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके। तकनीकी कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने "जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियाँ: अवसर और

चुनौतियाँ" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए भवनों और अवसंरचना को योजना बनाने, उनकी जांच करने और उनके प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। संस्थान की भागीदारी ने किकावती आवास, जलवायु- लचीले बुनियादी ढांचे, सतत ग्रामीण विकास और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका तालमेल और मजबूत हुआ।

टेक्नोलॉजी

सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन

## जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत

■ सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार

रुड़की, 28 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 के दौरान प्रदर्शनी में भाग लेकर जलवायु-प्रतिक्रिया और टिकाऊ निर्माण तकनीकों का प्रभावी प्रदर्शन किया। यह सम्मेलन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक एवं खनिजिक अखण्ड पर एशिया एंड पैसिफिक केंद्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।



स्टॉल का निरीक्षण करते अतिथि।

प्रदर्शनी का उद्घाटन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का निरीक्षण कर वैज्ञानिकों से संवाद किया

और जलवायु परिवर्तन से निपटने में संस्थान की तकनीकों और शोध प्रयासों की सराहना की। उद्घाटन सत्र में डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन.

कलेमेल्वी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और आपदाओं से निपटने में उन्नत तकनीकों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अनुसंधान को व्यवहारिक और उपयोगी समाधानों में बदलने पर बल दिया। सीबीआरआई ने भवन विज्ञान एवं निर्माण क्षेत्र से जुड़े कई नवाचार प्रदर्शित किए, जिनमें पीएमएवाई-जी के तहत विकसित उडी-प्रिंटेड ग्रामीण आवास, किकावती निर्माण तकनीक, स्मार्ट विलेज समाधान, रेजिलिएंट विलिडिंग सिस्टम, श्वेताम मंदिर का संरचनात्मक मॉडल तथा जिंग-जेन ईट भट्टा तकनीक शामिल रही।

तकनीकी सत्र में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने बताया कि यन्त्रों की योजना, जांच और प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

## Technology and Innovation Conference 2.0: CBRI Presents Advanced Construction Technologies

- Dr. N. Kalaiselvi, Secretary of DSIR and Director General of CSIR also present on this occasion
- Dr. Sanjeev Kumar Singh, Chief Scientist at CSIR-CBRI, delivered a lecture on the topic "AI Technologies for Addressing Climate Change: Opportunities and Challenges."
- CBRI presents advanced construction technologies at the Technology and Innovation Conference 2.0 organized by the Ministry of Earth Sciences

प्रविष्टि तिथि: 28 JAN 2026 10:51PM by PIB Dehradun

Presentation of CBRI's advanced manufacturing technologies at the Technology and Innovation Conclave 2.0 organised by the Ministry of Earth Sciences in New Delhi. CSIR–Central Building Research Institute, Roorkee, participated in the Technology and Innovation Conclave 2.0, held from January 28-30, 2026, at Prithvi Bhawan, Ministry of Earth Sciences, Government of India, New Delhi. The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP).



The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP). The exhibition was inaugurated by the Chief Guest, Dr. Jitendra Singh, Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Earth Sciences, Government of India. Dr. N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR and Director General, CSIR, was also present on the occasion.

Following the inauguration, both Dr. Jitendra Singh and Dr. N. Kalaiselvi visited the CSIR-CBRI exhibition stall, where innovative, sustainable, and technology-based solutions developed by CSIR-CBRI in the field of building science and construction were showcased. They viewed the models displayed at the stall, including the 3D-printed rural house developed under PMAY-G and the zig-zag brick kiln technology, and interacted with the scientists from the institute. During their visit, they expressed keen interest in CBRI's technologies and research work related to climate-resilient and sustainable infrastructure. During the inaugural session, Dr. N. Kalaiselvi addressed the attendees. In her address, she spoke about the role of advanced technologies and artificial intelligence in tackling climate change-related challenges and enhancing resilience to disasters.

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2219859&reg=3&lang=2>



निराक्षक रावन्द्र बालायान तथा अन्य पुलसकमा शामिल रहे ।

## **स्टाफ क्लब ने जीता फ्रेंडली क्रिकेट मैच**

रुड़की, 27 जनवरी ( अनिल): गणतंत्र दिवस के अवसर पर सीबीआरआई क्रिकेट ग्राउंड पर सीबीआरआई पेंशनर्स वेलफेयर टीम और सीबीआरआई स्टाफ क्लब टीम के बीच एक फ्रेंडली क्रिकेट मैच खेला गया। टॉस जीतकर स्टाफ क्लब के कप्तान डीपी कानूनगो ने पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। 10 ओवर के मैच में स्टाफ क्लब की टीम ने 101 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए पेंशनर्स वेलफेयर टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन 53 रन पर पूरी टीम आउट हो गई। निदेशक ने अंपायर की भूमिका निभाई। मैच के बाद संयुक्त फोटो लिया गया। सीबीआरआई पेंशनर्स क्रिकेट टीम में डीके गौतम, एके राजदान, डॉ. अचल मित्तल, आरडी सिंह, एसके नेगी, सुरेश गिरी, जसविंदर, डॉ. पीके यादव, नरेश यादव, अरविंद शर्मा, सुशील कुमार, मेहर सिंह उपस्थित रहे।

यू  
(  
के  
शी  
के  
प्र  
प्र  
शा  
ग  
बै

<https://www.facebook.com/share/p/18Q5UXLgCQ/>



भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया

पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में "भूकंप रेडोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से "भूकंप रेडोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और "आत्मनिर्भर भारत" की राष्ट्रीय परिकल्पना के साथ तालमेल पर जोर दिया। कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. आशीष पिप्पल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेडोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेडोफिटिंग रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. डी. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. थपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय, राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित थे।





उपास्थित रह।

पड्या क साथ बठक का पूरा करवाया गया।

## सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

**रुड़की।** हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटीरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली

आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं

## सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

**रुड़की।** हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटीरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली

आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं

9:04 PM

# तेजस्विनी एक्सप्रेस

देहरादून संस्करण

सोमवार 19/01/2026

www.Tejasvini express.com



## सीबीआरआई रुड़की में हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के छात्रों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

हरिद्वार। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल, धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटेरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी तथा रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों तथा सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय के प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि सीबीआरआई जैसे प्रतिष्ठित संस्थान का भ्रमण विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। विद्यालय का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक अनुभव भी प्रदान करना है।

विद्यालय की प्रधानाचार्या रीमा जैन ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि इस शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है। ऐसे अनुभव छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



## सवाई माधोपुर में प्रदर्शनी में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन

गोल्डन टाइम्स  
गडकी (आरिफ नियाजी)  
सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), गडकी ने 15-16 जनवरी 2026 को सवाई माधोपुर में प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गुप्ता, आईएस और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट काना राम सिरवी, आईएस ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसरचना नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की। प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने उन्नत ग्रामीण आवास और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और संवादात्मक स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में

पीएमएवाई-जी मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने



की मशीनें, ईंट भट्टे की तकनीकें, राम मंदिर मॉडल और अन्य नवाचमिक, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों को आकर्षित किया, जिन्होंने ग्रामीण आवास और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों की व्यावहारिक उपयोगिता और विस्तार क्षमता की सराहना की। प्रदर्शनी के साथ-साथ, कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन समारोह से हुआ, जिसके बाद राजस्थान सरकार के ग्रामीण

विकास सचिव ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद राजस्थान के पीएमएवाई-जी

पर एक ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति दी

गई, जिसमें राज्य में चल रही ग्रामीण आवास घटलों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला की चर्चाओं में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने सक्रिय भूमिका निभाई। संस्थान के एक प्रतिनिधि ने सीबीआरआई के प्रदीप कुंजी के माध्यम से सीबीआरआई के माध्यम से ग्रामीण विकास और ग्रामीण विकास के लिए नवाचारों और विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। डॉ. अजय चौरसिया ने पकिफायटी और जलवायु-प्रतिरोधी ग्रामीण आवास पर एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी, जिसमें सीएसआईआर-सीबीआरआई के अनुसार

गान-आधारित समाधानों, जलवायु-अनुकूल आवास डिजाइनों, आपदा-प्रतिरोधी निर्माण पद्धतियों और विभिन्न ग्रामीण और जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त टिकाऊ निर्माण तकनीकों का प्रदर्शन डाला गया। प्रदर्शनी के माध्यम से सीबीआरआई ने ग्रामीण विकास और ग्रामीण विकास के लिए नवाचारों और विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। डॉ. अजय चौरसिया ने पकिफायटी और जलवायु-प्रतिरोधी ग्रामीण आवास पर एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी, जिसमें सीएसआईआर-सीबीआरआई के अनुसार

### भारतीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार चालू वित्त वर्ष में 7.8% तक रह सकती है GDP ग्रोथ

एजेंसी वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी मजबूती का प्रदर्शन कर रही है। प्रमुख सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया (Deloitte India) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत की आर्थिक विकास दर चालू वित्त वर्ष (2025-26) में शानदार प्रदर्शन करने वाली है। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष में 7.5 से 7.8 प्रतिशत रहने की संभावना है, जो 2026-27 में 6.6 से 6.9 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है। सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया ने यह जानकारी दी। डेलॉयट ने कहा कि भारत के लिए 2025 को घरेलू मांग में 'जुआरूपन', राजकोषीय, मौद्रिक एवं श्रम नीतियों में निर्णायक सुधारों और व्यापार नीतियों में पुनर्संयोजन के वर्ष के रूप में याद किया जाएगा। चालू वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में आधार वर्ष 2011-12 पर आधारित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आठ प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके बावजूद कि व्यापार में व्यवधान, विकसित अर्थव्यवस्थाओं में नीतिगत बदलाव एवं अस्थिर पुंजी प्रवाह जैसी वैश्विक चुनौतियाँ मौजूद हैं। डेलॉयट इंडिया को उम्मीद है कि व्यापार मांग और सेवाओं की मजबूत गतिविधियों से वित्त वर्ष 2025-26 में जीडीपी की वृद्धि दर 7.5 से 7.8 प्रतिशत रहेगी। इसके अलावा, कंपनी ने बयान में कहा कि उच्च आधार एवं वैश्विक अनिश्चितताओं के बने रहने से वित्त वर्ष 2026-27 में वृद्धि दर घटकर 6.6 से 6.9 प्रतिशत हो सकती है। डेलॉयट इंडिया की अर्थशास्त्री यमकी मजुमदार ने कहा, "भारत की मजबूती कोई संयोग नहीं है। यह हल्के समय से अपनाई गई वृद्धि-समर्थक नीतियों का परिणाम है।"

# सीबीआरआई ने ग्रामीण आवास नवाचारों से छोड़ी मजबूत छाप



गात  
शीघ्र  
ससे  
साथ  
शत  
ससे  
धाएं

रुड़की, 15 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय भागीदारी करते हुए किफायती, टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल ग्रामीण आवास से जुड़ी अपनी उन्नत तकनीकों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार की ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रेया गुहा एवं जिला कलेक्टर काना राम सिरवी ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का अवलोकन कर ग्रामीण आवास और अवसंरचना क्षेत्र में संस्थान के योगदान की सराहना की।

सीबीआरआई द्वारा लगाए गए संवादात्मक स्टॉल में पीएमएवाई-जी

## ■ राजस्थान में क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला की गई आयोजित

मॉडल हाउस, 3डी भवन निर्माण प्रणाली, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, उन्नत ईंट भट्टा तकनीक, राम मंदिर मॉडल और अन्य कम लागत व पर्यावरण-अनुकूल निर्माण समाधान प्रदर्शित किए गए, जिन्हें अधिकारियों ने व्यावहारिक और विस्तार योग्य बताया। कार्यशाला में सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने तकनीकी सत्रों में भाग लिया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने 'किफायती और जलवायु-प्रतिरोधी ग्रामीण आवास' विषय पर प्रस्तुति देते हुए प्रकाश डाला।



सीबीआरआई के दो वैज्ञानिकों की खोज, पर्यावरण के लिए भी होगा फायदेमंद

# मार्बल की धूल और कचरे से बन सकेंगे ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें

## अनुसंधान

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। मार्बल उद्योग में दशकों से कचरे (वेस्ट) के निपटान की समस्या बनी हुई थी, लेकिन अब विज्ञान और आधुनिक तकनीक ने इसका एक टिकाऊ समाधान खोज निकाला है। मार्बल खनन और कटाई के दौरान निकलने वाली मार्बल स्लरी (धूल और पानी का मिश्रण) और पत्थरों के टुकड़ों का उपयोग अब उच्च गुणवत्ता वाली ईंटों, ब्लॉक्स और फ्लॉरिंग टाइल्स बनाने में किया जा सकेगा।

सीबीआरआई रुड़की के प्रधान वैज्ञानिक राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी द्वारा इस तकनीक को अपनी टीम के साथ विकसित किया गया है। इसे सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राजेश कुमार ने बताया कि मार्बल पाउडर को सीमेंट और मिट्टी जैसे अन्य पदार्थों के साथ मिलाकर मजबूत,



रुड़की में सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने मार्बल की धूल और कचरे से ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें बनाई। • हिन्दुस्तान

टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल निर्माण सामग्री (जैसे ईंटें, पेंचर ब्लॉक, फर्श और दीवार की टाइलें) तैयार की जाती हैं। इससे कचरा कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है।

उन्होंने बताया कि मार्बल स्लरी पर्यावरण के लिए एक बड़ा खतरा रही है। सुखने के बाद यह धूल बनकर हवा में उड़ती है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियां होती हैं और बारिश में यह जमीन की उपजाऊ परत को ढंक कर उसे बंजर बना देती है। इस कचरे को

निर्माण सामग्री में बदलकर न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि मिट्टी और रेत पर निर्भरता भी घटेगी।

उन्होंने बताया कि मार्बल डस्ट में कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा अधिक होती है। जब इसे सीमेंट, फ्लाई ऐश और विशेष बाइंडर्स के साथ एक निश्चित अनुपात में मिलाया जाता है, तो प्राप्त होने वाले ब्लॉक्स पारंपरिक लाल ईंटों की तुलना में अधिक मजबूत और टिकाऊ होते हैं। बताया कि इन

## रोजगार के नए अवसर

इस तकनीक के विस्तार से मार्बल बेल्ट वाले क्षेत्रों में लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। सरकार भी वेस्ट टू वेल्थ अभियान के तहत ऐसे स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रही है। इससे न केवल डंपिंग याइर्स की समस्या खत्म होगी, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार भी खुलेंगे।

ब्लॉक्स की दबाव सहने की क्षमता सामान्य ईंटों से बेहतर पाई गई है। स्थानीय स्तर पर कचरा उपलब्ध होने के कारण इनके उत्पादन की लागत काफी कम आती है।

हाल ही में सीबीआरआई ने इस तकनीक को मेसर्स मार्बल प्लाजा नई दिल्ली को सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया है। इस तकनीक के विकास में राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी के साथ-साथ टीम सदस्य शाहनवाज खान, रोहित कुमार, मोहित कुमार का भी योगदान रहा।

# CSIR-CBRI in the Limelight | 15.01.2026

<https://www.janmudde.com/archives/36675>

## सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन।

By Jan Mudde · 2 weeks ago · 1 min read



Spread the love



आरफ़ नियासी।

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 15-16 जनवरी 2026 को राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय रूप से भाग लिया और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत कृषिक्षेत्र, टिकाऊ और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ग्रामीण आवास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गृह, आईएसआर और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट कन्या राम शिरडी, आईएसआर ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसरवादी नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की।

प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने उच्च तकनीकी और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और सांख्यिकीय स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में पीएसआईआई-की मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, ईट भट्टे की तकनीकें, राम मॉडल मॉडल और अन्य नवाचारों, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने अतिरिक्त जानकारी और आकर्षित किया निम्नलिखित प्रदर्शनों

JAN MUDDÉ LIVE



1 of 55



विश्वीय के अन्वेष... खेती विकासपुर... रुड़की विकास में प्र...  
विश्वीय के अन्वेष... खेती विकासपुर... रुड़की विकास में प्र...  
विश्वीय के अन्वेष... खेती विकासपुर... रुड़की विकास में प्र...



रुड़की में डाटा ए... रुड़की वन कृषि... भारतीय किसान यु...

रुड़की में डाटा ए... रुड़की वन कृषि... भारतीय किसान यु...



रुड़की में डाटा ए... रुड़की वन कृषि... भारतीय किसान यु...

रुड़की में डाटा ए... रुड़की वन कृषि... भारतीय किसान यु...

1 of 55

LIVE CRICKET SCORE

RECENT	LIVE	UPCOMING
NZ 215/7(20.0)	vs	IND 165/10(18.4)
New Zealand win by 50 runs		
New Zealand tour of India, 2026, 4th T20I		
NZ 153/9(20.0)	vs	IND 155/2(10.0)
India win by 8 wickets		
New Zealand tour of India, 2026, 3rd T20I		
NZ 208/5(20.0)	vs	IND 209/3(15.2)
India win by 7 wickets		
New Zealand tour of India, 2026, 2nd T20I		

WEATHER

HARIDWAR WEATHER	21°C
broken clouds	
Fri	Sat
Sun	Mon
Tue	Wed
Thu	



# Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई में भवन निर्माण सामग्री और निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन



Manoj kumar • 2 weeks ago

245 2 minutes read



Spread the love



**रुड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 14 से 16 जनवरी, 2026 तक तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के कुल 30 छात्रों और 3 संकाय सदस्यों ने भाग लिया, जहां उन्हें अत्याधुनिक अनुसंधान, प्रयोगशाला सुविधाओं और आधुनिक निर्माण पद्धतियों की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त हुई।

<https://www.nazariyanews.com/38860/>

र  
या  
दय  
लय  
द्वारा  
के  
थीन  
एवं  
छता  
फ-  
व  
रुक  
डॉ.  
करी  
संह,  
गोपी  
।।

## नई भवन सामग्री, उन्नत निर्माण तकनीकों पर की गई चर्चा

### ■ तीन दिवसीय कार्यक्रम में दी जाएगी व्यावहारिक जानकारी

रुड़की, 14 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में भवन निर्माण सामग्री और आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर आधारित तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के 30 छात्र और तीन संकाय सदस्य भाग ले रहे हैं।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने



प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते प्रतिभागी।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सीबीआरआई की भूमिका और प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों की जानकारी दी। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. तबिश आलम

ने नई भवन सामग्री और उन्नत निर्माण तकनीकों पर केंद्रित सत्रों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा टिकाऊ अवसंरचना के लिए उनके महत्व पर प्रकाश डाला।





Share



Copy url



Save



Font Size

D'load  
Image

Image



Text



Listen

## बिजली संयंत्रों के कचरे से बनेगा मजबूत और सस्ता प्लास्टर

**■ गणेश्वर सिंह**

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वैज्ञानिकों ने औद्योगिक कचरे के निपटान की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। वैज्ञानिकों ने धर्मल पावर प्लांट से निकलने वाले कचरे (एफजीडी-जिप्सम) का इस्तेमाल कर एक खास किस्म का प्लास्टर तैयार किया है।

यह तकनीक न केवल प्रदूषण कम करेगी, बल्कि घरों के निर्माण को सस्ता और सुरक्षित भी बनाएगी। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के मार्गदर्शन में डॉ.

**■ एफजीडी जिप्सम को 150 डिग्री तापमान तक किया जाता है गर्म**

नीरज जैन और डॉ. सीमित्रा मैती की टीम ने इस तकनीक को विकसित किया है।

इस बारे में डॉ. नीरज जैन ने बताया कि देश में धर्मल पावर प्लांट से निकलने वाले एफजीडी जिप्सम कचरे का समाधान करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ था। उन्होंने बताया कि धर्मल पावर प्लांट से बिजली बनाने के लिए कोयले का इस्तेमाल

किया जाता है। जब कोयला जलता है तो धुएँ के साथ सल्फर ऑक्साइड गैस भी निकलती है, जो कि पर्यावरण और सेहत दोनों के लिए बेहद हानिकारक है।

ऐसे में प्लांट में चिमनियों से निकलने वाले धुएँ को साफ करने के लिए बड़े बड़े एयर प्युरिफायर का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें पानी और चूना पत्थर का गाढ़ा घोल होता है। जब धुँआँ इस घोल से गुजरता है तो सारा सल्फर यह तकनीक एब्जॉर्ब कर लेता है। इसके चलते हवा तो साफ हो जाती है लेकिन इस प्रक्रिया से एक नई समस्या

पैदा हो जाती है। जब चूना सल्फर को पकड़ता है तो एक नया पदार्थ बनाता है। जिसे जिप्सम या औद्योगिक कचरा कहा जा सकता है।

उन्होंने बताया कि यह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के साथ-साथ धरती पर बोझ होता है। इस समस्या के समाधान के लिए फैक्ट्रियों और बिजली संयंत्रों से निकलने वाले जिप्सम को 150 डिग्री सेल्सियस तापमान पर गर्म किया जाता है। इस प्रक्रिया में अन्य सामग्री और केमिकल का इस्तेमाल भी किया जाता है। इसके बाद यह बेहतरीन प्लास्टर में बदल जाता है।



रुड़की के सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया प्लास्टर।

**पारंपरिक सीमेंट-रेत प्लास्टर से है बेहतर**

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों की ओर से तैयार यह नया प्लास्टर कई मायनों में वर्तमान में उपयोग होने वाले सीमेंट-रेत के प्लास्टर से बेहतर पाया गया है। इसका वजन पारंपरिक प्लास्टर की तुलना में आधा है। इससे इमारतों पर बोझ कम पड़ता है। यह प्लास्टर आग से सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे घर सुरक्षित रहते हैं। औद्योगिक कचरे से बनने के कारण इसकी कीमत काफी कम है, जिससे घर बनाना किफायती होगा। यह पारंपरिक प्लास्टर से कई गुना अधिक टिकाऊ साबित हुआ है।

## “भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल”



By Sahara Live News  
07 JAN 7, 2026



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा “भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल” पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मन का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने सीएसआईआर इंटिग्रेटेड स्मिथ इनोवेशिएटिव के अंतर्गत 7 से 9 जनवरी 2026 तक “भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल” विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मन का उद्घाटन किया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों विशेष रूप से युवा वास्तुकारों को भारत की पारंपरिक वास्तुकला एवम शिल्प परंपराओं से परिचित कराना तथा उन्हें सात और कार्बन रहित आधुनिक निर्माण पद्धतियों से जोड़ना है।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत अतिथियों के स्वागत एवम दीप प्रज्वलन से हुई। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच एंड डिसेमिनेशन सर्विसेज प्रमुख, डॉ. नीरज जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सीएसआईआर के कौशल विकास कार्यक्रमों के उद्देश्यों तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में इस कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में वास्तुकार एस. के. नेगी, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई एवं पारंपरिक वास्तुकला विशेषज्ञ एवम प्रो. राम सतीश पसुपुट्टी, वास्तुकला एवं नियोजन विभाग, आईआईटी रुड़की, उपस्थित रहे। उन्होंने भारतीय पारंपरिक आवास उखान पुरस्कार 2.0 के विजेताओं के लिए जूरी की भूमिका निभाई थी। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने पारंपरिक वास्तुकला शिल्प को संरक्षित करने और आधुनिक निर्माण प्रणालियों के साथ इसके सम्मन्ध की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशाला भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए सतत एवं लचीले निर्माण को प्रोत्साहित करती है।

उद्घाटन सत्र के दौरान वास्तुकार अनूप कुमार प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक “द लिविंग क्राफ्ट ऑफ इंडियन आर्किटेक्चर” का विमोचन किया गया। इसके साथ ही भारतीय पारंपरिक आवास उखान पुरस्कार 2.0 के अंतर्गत पारंपरिक आवास एवं वास्तुकला शिल्प के क्षेत्र में उत्कृष्टतापूर्ण योगदान देने वाले वास्तुकारों, वास्तुकला के विभिन्न संस्थानों के छात्रों को सम्मानित किया गया।

कार्यशाला में देशभर के विभिन्न संस्थानों से बड़ी संख्या में युवा वास्तुकारों एवं वास्तुकला के छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रमुख संस्थानों में पेरियार मणिअम्माई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वल्लभ, तमिलनाडु; मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (MANIT), भोपाल; भग्य प्रदेश; स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (SPA), विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश; आईईएस कोलिन ऑफ आर्किटेक्चर, मुंबई; महाराष्ट्र; तथा नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (NSUT), द्रासका, दिल्ली इत्यादि शामिल रहे। जिससे उन्हें भारत की पारंपरिक निर्माण तकनीकों और शिल्प परंपराओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

<https://www.saharalivenews.com/archives/10357>



# बहुमंजिला इमारतों में लगे शीशों की सफाई करेगा रोबोट

## एक्सक्लूसिव

### ■ महेश्वर सिंह

रुड़की। देश में ऊंची, कांच से ढकी इमारतों की तेजी से बढ़ती संख्या के कारण, फेकेड (बाहरी मुखौटा) और कैनोपी (छतरी) का रखरखाव आवश्यक और अत्यंत खतरनाक हो गया है। मैन्यूअल (हाथों से) सफाई में कर्मचारियों को असुरक्षित ऊंचाइयों, अप्रत्याशित मौसम, उपकरणों की खराबी और लंबे समय तक थकान का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप देश में अक्सर गंभीर चोट और मौतें होती हैं। सीबीआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों ने इसका समाधान निकाला है। उन्होंने



रुड़की ऑटोनोंमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट सीबीआरआई द्वारा तैयार किया गया है।

ऑटोनोंमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट तैयार किया है। जो कि कांच से ढकी बड़ी-बड़ी ऊंची इमारतों की सफाई आसानी से कर सकेगा।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के अनुसार इस तकनीक को



मेसर्स पाल एन पॉल इनकॉर्पोरेशन अंबाला सिटी, हरियाणा को हस्तांतरित कर दिया गया है। जो उद्योग-अनुसंधान सहयोग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैसे-जैसे शहर लंबवत (ऊंचाई में) बढ़ते जा रहे हैं, इस तरह

- खतरनाक ऊंचाइयों पर मानव की उपस्थिति को समाप्त करता है
- रोबोट एक समान, उच्च-गुणवत्ता वाली सफाई सुनिश्चित करता है
- हल्का, पोर्टेबल (ले जाने में आसान) और संचालित में सरल है
- सफाई दक्षता 500 वर्ग मीटर/घंटा तक (1 मीटर लंबी रोलर ब्रश के लिए)
- बाधा और टक्कर से करता है बचाव

के नवाचार सुरक्षित, अधिक स्मार्ट और अधिक टिकाऊ भवन रखरखाव को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस तकनीक को विकसित करने के लिए डॉ. रवींद्र बिष्ट, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ.

### रोबोट में ये हैं विशेषताएं

- किनारे की पहचान, मैन्यूअल/पीआईडी-आधारित पथ सुधार
- 10 किलोग्राम तक पेलोड ले जा सकता है
- ऑटोनोंमस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट का वजन 20 किलोग्राम है, जिससे इसे साइटों पर ले जाना, इंस्टॉल करना और डिप्लॉय करना बहुत आसान है

सोजू अलेक्जेंडर, डॉ. सिद्धार्थ सिंह, चंद्रभान पटेल, काली लाल सोलंकी, वी चक्रधर, दिनेश कुमार, समीर और सीएआर समूह में समय-समय पर योगदान देने वाले परियोजना स्टाफ को निदेशक ने बधाई दी।

# CSIR-CBRI in the Limelight | 20.12.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय



## राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

प्रतिष्ठित तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत- 2047' के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कल्लेस्वरी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।









(रिलीज़ आईडी: 2207118) आगतक पटल : 65  
इस विशिष्टि को इन भाषाओं में पढ़ें: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33>



## राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

**उजाला भारत न्यूज**  
**रुड़की/पाली।**

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत- 2047' के विज्ञान के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ

अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कुल रूप तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग,



डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहें। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई

दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया।

सीएसआईआर - सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

पा. हस्. तै. श. अ. क. मे. के. अ. है. इ. मि. उ. च. मु. अ. क. मे. स. क. स. वि. ब. ज. ए.

## CSIR SMART Village Initiative Launched from Sawaipura

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

This mission mode project inaugurated by Member of Parliament, Pali, Shri. P. P. Chaudhary, and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, DG-CSIR, New Delhi, Shri Bhim Raj Bhati, MLA, Pali constituency along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharia, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Dr. P. C. Panchariya, Director CSIR-CEERI, Pillani, Sh. Vishal Sipa, ACEO, Pali, Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat, Sh. Sunil Bhandari, District President, Sh. Prakesh Patel, Tahasildhar, Rohat, Shri Dilip Singh VDO, and Sh. Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, along with scientists from different CSIR laboratories, who were present at the event.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories were present and conducted a detailed need assessment survey, leading to the identification of suitable technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan. During the launch event, the exhibition gallery showcased a range of climate-responsive and livelihood-oriented invention, including solutions for housing and infrastructure (cool roof technologies, low-cost housing, and rural roads), renewable energy and water management (solar assisted systems, wastewater and fecal sludge treatment, and safe drinking water solutions), agriculture and allied sectors (aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition, and smart farm machinery), waste management (solid waste management, biodegradable products, biogas, and composting), digital and AI-enabled systems (smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, and milk quality analysis), as well as groundwater assessment.

Together, these integrated inventions aim to improve quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and schemes. Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On this occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will serve as the implementation partner for the project. The villagers of Sawaipura interacted with scientists from different CSIR laboratories. The event was coordinated by, Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were present at the event.







<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33>





शिक्षा मंत्रालय



## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

- प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत @2047' के विज़न के अनुरूप मिशन-मोड परियोजना
- जलवायु-सहनशील, आजीविका-केंद्रित एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियों का एकीकृत कार्यान्वयन
- 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा आवश्यकता-आधारित प्रौद्योगिकी आंकलन

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 10:16PM by PIB Dehradun

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के स्वाइपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ठाकुर श्री महान पराक्रम सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत - चौटिला, ग्राम प्रतिनिधि-गण, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।





कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रही। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनो एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।



कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

12/23/25, 12:01 PM

Press Release: Press Information Bureau



(रिलीज़ आईडी: 2207121) आगतुक पटल : 36  
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2207121&reg=46&lang=45>



सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, प्राप्रतिनिधि सुनिल भण्डारी, पाली विधायक भीमराज बाटी, बिस्माल सिपा अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. पी. वमा कार्यकारी अभिप्राय, ग्रामीण विकास, हरि सिंह रावपुरोहित कार्यकारी अभिप्राय पंचायती राज, पूरण कुमार शानी उखंड अधिकारी, मनमोहन मीणा खंड विकास अधिकारी गेट्ट टवा दिलीप सिंह ग्राम विकास अधिकारी, चोटीला ग्राम सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्त उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समनव्य (सीएसएआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर ने किया।



## CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative from Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Posted On: 20 DEC 2025 10:13PM by PIB Dehradun

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on 'SMART VILLAGE' from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of 'Viksit Bharat @ 2047.'



The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaseki, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhatti, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramachandran, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prajesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Itakur Shri Mahan Parakram Singh, Shri Dilip Singh, VDO, and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.



These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chaurasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Navneet, Shri Chakradhar, and other officials were also present.



The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetailm.aspx?PRID=2207120&reg=46&lang=1>

## सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सवाईपुरा में हुआ शुभारंभ



पहल के शुभारंभ

पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के विकसित भारत / 2047 के विजन के अनुरूप सीएसआईआर स्मार्ट विलेज नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ 20 दिसम्बर को किया गया। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामीं का चयन किया गया है।

इसमें राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गांव को गौरव शुक जीन में शामिल किया गया है। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से ग्रामीण विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो लंबे दूरी के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व गौडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा

सहयोग प्रदान किया जा रहा है। सहभागी प्रयोगशालाएं आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकों का परिनियोजन कर रही हैं। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ 20 दिसम्बर को पाली सांसद पी. पी. चौधरी, तथा गन बेकर, गन इलेक्शन पर संयुक्त संसदीय समिति (केपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (जीमती) एन. कलेशेल्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (सीएसआईआर) तथा

महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा वर्षअंत माध्यम से किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामनगरवाल, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित विगत प्रस्तावन के वरिष्ठ अधिकारी, जयप्रतिनिधि सुनित भरद्वाज, पाली विधायक भीराव भाटी, विद्याल मिश्र आर्थिक प्रणुषा कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. पी. वार्ड कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास, हरि सिंह रायपुरोहित कार्यकारी अधिकारी पंचायती राज, पुष्प कुमार शर्मा उपचंड अधिकारी, ग्रामोद्धार योजना चंड विकास अधिकारी रोड तथा दिलीप सिंह ग्राम विकास अधिकारी, कोटिला ग्राम सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समन्वय (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर ने

मब डोर-डू-डोर होगा सर्वे 25 तक नाम नहीं हटाने पर होगी कार्यवाही एगी वसूली

योजना के अंतर्गत के अनुसार परी निम्नलिखित स्थानों जिले में भारत (सेब द बिल्टन) द्वारा

Home, राजस्थान, पाली, 'विकसित भारत' की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले 'CSIR स्मार्ट गाँव' मिशन का ऐतिहासिक आगाज

## ‘विकसित भारत’ की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले ‘CSIR स्मार्ट गाँव’ मिशन का ऐतिहासिक आगाज

देश राजस्थान पाली

PUBLISHED ON DECEMBER 20, 2025

BY राव गुमान सिंह

f X WhatsApp Telegram



सर्कल न्यूज

आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616







## 14 वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की तकनीक से बदलेगी गांव की तस्वीर; खेती, पानी और मकान सब होगा हाईटेक

सर्कल न्यूज नेटवर्क पाली/सवाईपुरा। राजस्थान के पाली जिले का एक छोटा सा गाँव 'सवाईपुरा' अब देश के नक्शे पर विज्ञान और तकनीक के मॉडल के रूप में उभरेगा। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत-2047' के सपने को साकार करने की दिशा में शनिवार को यहाँ एक नया इतिहास लिखा गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत सीएसआईआर (CSIR) ने अपने महत्वाकांक्षी "स्मार्ट गाँव" (Smart Village) मिशन मोड प्रोजेक्ट का शुभारंभ इसी गाँव से किया है।

इस मिशन का औपचारिक उद्घाटन पाली सांसद पी.पी. चौधरी और सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने किया। इस दौरान पाली विधायक भीमराज भाटी, सीएसआईआर-सीबीआरआई निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला और सीएसआईआर-सीरी निदेशक डॉ. पी.सी. पंचारिया भी मौजूद रहे।



सर्कल न्यूज

आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम तागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का



क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कुल रूप तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का वैज्ञानिक आकलन।
- **डिजिटल और एआई:** वन्यजीव-मानव संघर्ष रोकने के लिए एआई सिस्टम, स्मार्ट बिजली प्रबंधन, डिजिटल हेल्थ मॉनिटरिंग और दूध की गुणवत्ता जांचने वाली मशीनें।



तकनीक की प्रदर्शनी ने मोहा मन कार्यक्रम स्थल पर एक विशेष तकनीकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें वैज्ञानिकों ने दिखाया कि कैसे बायो-गैस, कम्पोस्टिंग और ठोस कचरा प्रबंधन से गाँव को 'जीरो वेस्ट' बनाया जा सकता है। मिशन के नोडल समन्वयक डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी ने बताया कि इन तकनीकों का मकसद ग्रामीणों की आय बढ़ाना और जीवन स्तर सुधारना है।

## ← Post

**ZEE Rajasthan** ✓  
@zeerajasthan\_

#Pali : पाली जिले के रोहट क्षेत्र के सवाईपुरा से CSIR स्मार्ट विलेज मिशन का शुभारंभ कल

@DcDmPali @Palisandeep\_ @BalaramHarawas #LatestNews  
#RajasthanNews #RajasthanWithZee

**19-12-2025**

ATA PLAY 1177 | airtel 336 | dishtv 727 | Hathu 785 | DCM 331 | 332 | D2H 843

**पाली जिले के रोहट क्षेत्र के सवाईपुरा से CSIR स्मार्ट विलेज मिशन का शुभारंभ कल**

प्रधानमंत्री के "विकसित भारत @ 2047" विज़न के तहत भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन सीएसआईआर स्मार्ट विलेज मिशन की पाली जिले के रोहट क्षेत्र के सवाईपुरा से कल की जाएगी शुरुआत, देशभर के छह चयनित गांवों में शामिल सवाईपुरा में अब आवास, सड़क, कृषि, आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, जल प्रबंधन, शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का किया जाएगा प्रयोग, 13 सीएसआईआर प्रयोगशालाएं करेंगी तकनीकी हस्तक्षेप, इस राष्ट्रीय मिशन का शुभारंभ पाली MP पीपी चौधरी और सीएसआईआर महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी करेंगे, कार्यक्रम में जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और सीएसआईआर के वैज्ञानिक रहेंगे मौजूद, सवाईपुरा बनेगा देश का स्मार्ट विलेज मॉडल, लैब टू लैंड की अवधारणा पर होगा समग्र ग्रामीण विकास

**BREAKING NEWS**

The screen displays various icons representing smart village initiatives: Telemedicine, Village Planning, Waste Management, Infrastructure Development, Hygiene and Sanitation Management, Energy Connectivity, IOT, IoT Based Monitoring, Road Connectivity, Digital Connectivity, and Agro-Revenue Improvement. Below the icons is a map of Pali district with several villages marked: Chumathang Village, Junakimondal Village, Sawaiपुरा Village, Bhoda Village, Janakpur Village, and Kusumpur Village. A legend indicates different climatic zones: Hot-Dry, Warm-Humid, Temperate, and Cold.

11:30 PM · Dec 19, 2025 · 799 Views

<https://share.google/Q5Tbf6v2TLgYFmg9U>



# स्मार्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्करसहायदाता/पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानपुरा (रफसेन), लद्दाख का चुमावांग (लेह), असम का जुनाकिमाओल (जोहराट), ओडिशा का कुसुमपुर (केजरीनाथ) और गुजरात का भाड़ा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपयोग

और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एग्री रेवेन्यू इम्प्रूवमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेडिसिन, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हइजीन एंड सैनिटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वोटर 650 हैं। नर नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग क्लेक्टर करेंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

## स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे



• **आवास और निर्माण (CSRI-CBRI):** भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।  
• **सड़कें (सीएसआईआर-सीबीआरआई):** वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।  
• **घाटी ट्रेक (सीएसआईआरआई, सीईईआईआरआई):** ई-ट्रेक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।

• **ऊर्जा और पर्यावरण (सीएसआईआरआई, सीईईआईआरआई):** सोलर-बायोमास हाइब्रिड माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एग्रीवोल्टिक्स।  
• **जल प्रबंधन (आईआईसीटी, इनजीआरआई):** भूजल आकलन और उन्नत बाटर पट्टीरूम।  
• **स्वास्थ्य सेवा (सीईईआईआरआई, हइजीनआईआरआई):** टेली-हेल्थ कनेक्ट और जल रोधन प्रणाली (डी-टैक्स नीर)।

## सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलाता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

## CBRI रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

पीआईबी

देहरादून 20 दिसंबर | भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन कलैस्रेन्ती महानिदेशक सीएसआईआर



पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण

सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम



## CSIR-CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative From Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

**Dehradun (The Hawk):** The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE" from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramacharla, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Dilip Singh, VDO; and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for



deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, bee-keeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.

These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of

Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present. The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

## Rs 6 Crore Loan Scam At Nainital Bank Almora, Fir Against Ex-Manager

Swati

**Almora (The Hawk):** Rs 6 Crore Loan Scam at Nainital Bank, FIR Registered A major loan fraud has been uncovered at the Nainital Bank branch in Almora, where the then branch manager allegedly manipulated 37 loan accounts, causing a loss of

t IIT Roorkee

## **CSIR-CBRI in the Limelight | 19.12.2025**

Ministry of Science & Technology



### **CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission**

- Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions
- Building achieves significant water, energy and cost savings using indigenous technologies

Posted On: 19 DEC 2025 3:28PM by PIB Dehradun

In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.



The innovative facility was inaugurated virtually by Dr. N. Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the august presence of Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasized that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof. R. Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.





Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.



With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.



### ☀️ CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

☀️ Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions



3:33 PM · Dec 19, 2025



1



Reply



Copy link

Read 1 reply

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206658&reg=39&lang=33>



## सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ सवाईपुरा में कल 20 दिसम्बर को

प्रविष्टि तिथि: 19 DEC 2025 5:50PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के "विकसित भारत @ 2047" के विज़न के अनुरूप "सीएसआईआर स्मार्ट विलेज" नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है। इनमें सवाईपुरा (पाली जिला, राजस्थान), जनकपुर (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश), जुनाकीमंडल (जोरहाट जिला, असम), कुसुनपुर (केंद्रपाड़ा जिला, ओडिशा), चुमथांग (लेह जिला, लद्दाख) तथा भाड़ा (कच्छ जिला, गुजरात) शामिल हैं। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो "लैब टू लैंड" के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएँ सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीमैप, सीएसआईआर-नीरी, सीएसआईआर-सीआरआरआई, सीएसआईआर-एमपीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-सीएलआरआई, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, सीएसआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीएमईआरआई तथा सीएसआईआर-सीईआईआरआई शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्ड्रन) द्वारा कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में सहयोग प्रदान किया जाएगा। सहभागी प्रयोगशालाएँ आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिनिर्माण कर रही हैं। मिशन में ग्राम विकास सूचकांक (Village Development Index - VDI) के माध्यम से मूल्यांकन एवं प्रभाव आकलन का भी प्रावधान है। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को पाली सांसद श्री पी. पी. चौधरी, तथा "वन नेशन, वन इलेक्शन" पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेत्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामणचारला, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी — जिला कलक्टर पाली श्री लक्ष्मी नारायण मंत्री, श्री मुकेश चौधरी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी), डॉ. महेंद्र सिंह मेहता (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास), श्री विशाल सिपा (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज), श्री सी. पी. वर्मा (कार्यकारी अभियंता, ग्रामीण विकास), श्री हरि सिंह राजपुरोहित (कार्यकारी अभियंता, पंचायती राज), श्री पुरण कुमार शानी (उपखंड अधिकारी), श्री मनमोहन मीणा (खंड विकास अधिकारी, रोहट) तथा श्री दिलीप सिंह (ग्राम विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम) सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। इस कार्यक्रम का समन्वय (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर कुलकर्णी करेंगे।

000000

(रिलीज़ आईडी: 2206658) आगंतुक पटल : 67

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206540&reg=46&lang=1>

## CSIR Smart Village Initiative to be launched in Sawaipura tomorrow on 20th December

Posted On: 19 DEC 2025 5:31PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

Under this initiative, six villages located in different climatic regions of India have been identified, namely Sawaipura (Pali District, Rajasthan), Janakpur (Raisen District, Madhya Pradesh), Junakimandal (Jorhat District, Assam), Kusunpur (Kendrapara District, Odisha), Chumathang (Leh District, Ladakh), and Bhada (Kachchh District, Gujarat). This pilot project focuses on integrated village development by improving key development indicators through indigenous CSIR technologies, following the guiding principle of "Lab to Land". This mission has been initiated by the Nodal Laboratory, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, in collaboration with thirteen participating CSIR laboratories. The participating laboratories include CSIR-IHBT, CSIR-CIMAP, CSIR-NEERI, CSIR-CRRI, CSIR-AMPRI, CSIR-SERC, CSIR-CSIO, CSIR-IICT, CSIR-CLRI, CSIR-NIIST, CSIR-NGRI, CSIR-CMERI and CSIR-CEERI. Initial support was given by Rajasthan Government and Bal Raksha Bharat (Save the children) as an implementing agency. These laboratories are deploying a range of technologies in the areas of habitat planning and development, infrastructure, village roads, agriculture and allied technologies, farm based livelihood, renewable energy, eco-kitchens, groundwater management, wastewater management, disaster risk reduction, environmental protection, digital connectivity, education, and healthcare. The mission also includes evaluation and impact assessment through the Village Development Index.

The national launch of the mission was inaugurated by Member of Parliament, Pali Shri. P. P. Chaudhary, and Chairperson of the Joint Parliamentary Committee (JPC) on One Nation, One Election and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), New Delhi, along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Shri Lakshmi Narain Mantri, District Magistrate (DM), Shri Mukesh Choudhary (Chief Executive Officer), Dr. Mahendra Singh Mehata (Additional Chief Executive Officer, Rural Development, Pali), Shri Vishal Sipa (Additional Chief Executive Officer, Panchayat Raj, Pali), Shri C.P. Verma (Executive Engineer, Rural Development), Shri Hari Singh Rajpurohit (Executive Engineer, Panchayat Raj), Shri Puran Kumar Shani (Sub-Divisional Magistrate), Shri Manmohan Meena (Block Development Officer, Rohat), and Shri Dillip Singh (Village Development Officer, Chotila Gram), along with scientists, who were present at the event. This program will be coordinated by Dr. Kishor Kulkarni, Principal Scientist (CSIR).

000000

(Release ID: 2206656) Visitor Counter : 51

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206656&reg=39&lang=1>



# CSIR-CBRI Roorkee unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani



Garhwal Post Bureau

**ROORKEE, 19 Dec:** In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.

The innovative facility was inaugurated virtually by Dr N Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the presence of Prof R. Pradeep

Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasised that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof R Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently

advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.

Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient

conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Ex. Ashish Pippal, Ex. Ashok Singh, Ex. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.

With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.



**CSIR-CBRI in the Limelight | 09.12.2025**

## स्मार्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्कर संवाददाता/पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानपुरा (रामसेन), लाहौर का चुगापेगा (लेह), असम का जुनाकिमाओडल (जेरहट), ओडिशा का कुसुनपुर (केदारनाथ) और गुजरात का भद्रा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपयोग और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एगो रेवेन्यू इंफ़ोर्मेट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेंडिसन, इंफ़ोस्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हब्सनी एंड सैनेटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वोटर 650 हैं। नर नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग कलेक्टर करेंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर को विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एगो रेवेन्यू इंफ़ोर्मेट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेंडिसन, इंफ़ोस्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हब्सनी एंड सैनेटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वोटर 650 हैं। नर नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग कलेक्टर करेंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर को विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

### स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे



• **आवास और निर्माण (CSIR-CBRI):** भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।  
• **सड़कें (सीएसआईआर-सीआरआईआर):** वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।  
• **ग्रामीटिक (सीएसआईआरआई, सीआईआईआरआई):** ई-ट्रेक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।

• **ऊर्जा और पर्यावरण (सीएसआईआरआई, सीआईआईआरआई):** सोलर-बायोमास हब्स, माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एगोवोल्टिक्स।  
• **जल प्रबंधन (आईआईसीटी, इनजीआईआई):** भूजल आकलन और उमरत वाटर एंट्रीएम।  
• **स्वस्थ सेवा (सीआईआईआई, एगोआईआईआई):** टेली- हेल्थ कनेक्ट और जल शोधन प्रणाली (डी-टोक्स नीर)।

### सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इंफ़ोस्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलाता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआईआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

Presented in Dainik Bhaskar Newspaper



■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

[illegible]

अवसरों की शुरुआत ही बिजि  
प्रत्येक वैश्वी से हुए, जहाँ खरों में  
सोरोहावा को वे वैश्वीको हा  
गिरमि बिजिन बाइत, सोभ  
अवसरों और नयाचारों का  
आवर्तमान किया। खरों में अन  
निषेध निषेध, भाषागतन्यत्र  
भूरा, जलम और निषेधों और  
परावरण इतिहास में संश्लि  
प्रधानों देखो। या मय मयों को  
या मयमयों में मयमय मयमय  
वि विमय और मयमयमय मय  
मयमय मयमय को मयमयमय  
मयमय मयमय को मयमयमय  
मयमय मयमय को मयमयमय



ਅਸਲ ਕਾਰਜਕਰਮ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿਬਿੰਬ ਬਣਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਇਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ:

दुसरे खण्ड में जहाँ हंगरी की अर्थव्यवस्था में बर्बाद कैपिटल को नष्ट होना आता है और जहाँ जहाँ कैपिटल को नष्ट होना है, वहाँ वहाँ को दिखाते हैं।

टेलीवीजन टेलिफोन, प्रसारण  
साधन एवं अन्य सेवाएँ: देशभर के बीच  
संचालन सुविधाएँ भारत में प्रसारित  
करें। टेलीफोन सेवाएँ प्रसारित

केन्द्रीय सरकार ने आ. प्रवृत्तिनुसारने का  
कि आ. कार्यक्रम प्रारंभ की वस्तुविषय  
वर्षा की वैधता प्रमाणित करने  
के लिए आ. का प्रमाणित करने

समूह को अधिक संगठित है। इस विचार  
आम ने इसे से भी ऊपर के उपरान्त  
पर आधारित आधुनिक समयों के  
आवर्तन संरचना से एकीकृत कर  
सकत है। सबसे अधिक उच्च गुणवत्ता  
उत्पन्न किए जा सकते हैं।

जहाँ वे प्रथम हीटिंगको पाए  
अब मुक्त (विनोद) हैं, उन्हीं  
कमरे में विनोद जी वहाँ पर  
प्रवेशनामों के साथ (विनोद)  
ने जा कर जो लोग वहाँ पर  
विनोद जी वहाँ पर वहाँ पर  
हैं (उन्हीं) वहाँ पर वहाँ पर  
के लिए जो वहाँ पर वहाँ पर  
कमरे में वहाँ पर वहाँ पर  
विनोद जी वहाँ पर वहाँ पर  
विनोद जी वहाँ पर वहाँ पर

**Presented in Dainik Jagran Newspaper**

**CSIR-CBRI in the Limelight | 27.11.2025 & 28.11.2025**

# केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई का दौरा

## ■ जिज्ञासा-2.0 छात्र वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत ली तकनीकी जानकारी

रुड़की, 27 नवम्बर (अनिल): पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय, आईएमए देहरादून के 101 छात्रों और 6 शिक्षकों ने मंगलवार को सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक दौरा किया। यह प्रमण सीएसआईआर जिज्ञासा 2.0 छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग की प्रदर्शनी गैलरी के प्रमण से हुई, जहाँ छात्रों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न वैज्ञानिक मॉडलों, नवीन तकनीकों और शोध कार्यों को नजदीक से देखा। इस दौरान बरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम ने राम मंदिर मॉडल सम्बन्धित प्रदर्शनियों की जानकारी दी। बरिष्ठ प्रबन्धन वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने छात्रों को जिज्ञासा ईट भट्टा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में विस्तार से बताया। तकनीकी प्रमण का दूसरा चरण आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ, जहाँ डॉ. ताबिश आलम ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों और इसकी संरचना के बारे में अवगत कराया।



सीबीआरआई का दौरा करने वाले छात्र व अधिकारी।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनुठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने प्रमण प्रयोगिकी परक, अग्नि सुरक्षा अभियंत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों को सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनुठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने प्रमण प्रयोगिकी परक, अग्नि सुरक्षा अभियंत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

दो दिनों के अंतराल के बाद छात्रों को सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनुठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने प्रमण प्रयोगिकी परक, अग्नि सुरक्षा अभियंत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

Presented in Garhwal Post Newspaper

दैनिक जागरण

प्रीएम श्री केवी आइएमए के छात्रों ने सीबीआरआई का किया भ्रमण

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय पब्लिक अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की का पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आइएमए देहरादून के छात्रों ने 'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत भ्रमण किया। छात्र-छात्राओं ने विज्ञानियों से संवाद करने के साथ ही प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। भ्रमण करने वालों में विद्यालय के 101 छात्र और छह शिक्षक शामिल रहे।

सीबीआरआई में गुरुवार को छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी गैलरी से हुई। जहाँ छात्रों ने संस्थान के विज्ञानियों द्वारा निर्मित विविध वैज्ञानिक प्रदर्शनियों, नवीन तकनीकों और चल रहे शोध विकास का अवलोकन किया। बरिष्ठ विज्ञानी डॉ. ताबिश आलम ने राम मंदिर मॉडल और कई अन्य अनुसंधान के बारे में जानकारी दी। बरिष्ठ प्रबंधन विज्ञानी डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा ईट भट्टा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में अवगत कराया। अगला सत्र आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ। इस मौके पर सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवा शिक्षार्थियों को वास्तविक समय की वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा-आधारित शिक्षा से परे अपनी संमति को व्यापक बनाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों, संरचना और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुभववात्मक शिक्षण अवसरों की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रबन्धन विज्ञानी डॉ. सीमित्र मीठी ने अपलिफ्ट से धन विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने अपलिफ्ट को उपयोगी संसाधनों में बदलने की आधुनिक तकनीकों और रणनीतियों के लिए उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद छात्रों ने प्रायोगिक प्रयोगशाला आदि का भ्रमण किया। इस दौरान यहाँ चला रही शोध गतिविधियों और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

प्रधानमंत्री ने खुद, जहाँ सचो ने  
लेखोना कहाँ के ईश्वरको हाथ  
पुनर्जन्म विधिना बतायो, यहाँ  
प्रधानमंत्री और नरेशाचारी का  
आत्मिकता विधि। सचो ने अपने  
निर्देश सचोरी, सचोपनस्यस्य  
सुख, अथवा श्रौतनिकी और  
पञ्चतन्त्र ईश्वरिणी के संबंध  
प्रधानी देखो। या सच सचो को  
न सचोने में नरेशाचारी सचोरी  
कि विधि और अनुष्ठान ईश्वर  
उत्पत्ति लेखो को समझो के  
उत्पत्ति में योगदान करो है।



दोहरी धीरे धीरे गिर, जब तक कि  
जिस तब तक धीरे धीरे धीरे धीरे  
संभव है, तुम्हारे धीरे धीरे धीरे  
काम। धीरे धीरे धीरे धीरे धीरे

मन्त्र को जब सा-सात है। तब तबि  
असम मे सवे से सौ कर्ब के उपरि  
पर सात कि ज्ञानिक सन्तोसो को  
अवसम से सवे से सौ कर्ब के  
मन्त्र को सवे से सौ कर्ब के  
तबि से सवे से सौ कर्ब के

[illegible]





Presented in Dainik jagran Newspaper



Presented in Garhwal Post Newspaper

**CSIR-CBRI in the Limelight | 19.11.2025**

## CBRI Hosts Pre-Conference Event for the 4th International Symposium on "One Health, One World"

- Pre-conference workshop titled "One World, Many Hazards" organised at CSIR-CBRI
- Participants from University of Tokyo (Japan), COER University and AcSIR India presented posters and oral talks

प्रतिष्ठित तिथि: 18 NOV 2025 6:38PM by PIB Dehradun

CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, organised a pre-conference event titled "One World, Many Hazards" today as part of the upcoming 4th International Symposium on One Health, One World (OHOW-2025).



Participants from the University of Tokyo, Japan, COER University and AcSIR India actively took part in the programme, showcasing their ideas and research through hand-drawn chart-based art forms. Their posters highlighted various global hazards including earthquakes, landslides, pollution, heart-health concerns and pandemic situations. They also presented combined issues along with possible solutions, which were discussed in detail during the session. The poster display was followed by oral presentations, reflecting the participants' creativity, scientific temperament and interdisciplinary approach.



The pre-conference workshop sessions were chaired and the presentations evaluated by Dr. D. P. Kanungo and Organizing Secretary Dr. Ajay Chourasia. The programme was coordinated by Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram.

The event served as a dynamic platform for knowledge exchange and strengthened international collaboration toward addressing global hazards under the overarching theme of "One Health, One World."

(प्रिन्सिपल ऑफिसी २१०१२२०) आगंतुक टाउल - १६२

Presented on : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191330>

## ‘एक स्वास्थ्य-एक विश्व’ पर सम्मेलन पर चर्चा

रुड़की, 18 नवम्बर (अनिल): केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में ‘एक स्वास्थ्य, एक विश्व’ विषय पर आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। ‘एकविश्व-अनेकसंकेत’ शीर्षक से हुए इस कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय (जापान), सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी दर्ज की।

प्रतिभागियों ने चर्चा पर हस्तनिर्मित कलाकृतियों के माध्यम से भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य समस्याओं और महामारी जैसे विविध आपदाओं से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया। उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के संभावित समाधान भी साझा किए, जिन पर सब के दौरान विस्तार से चर्चा की



सम्मेलन में प्रतिभाग करते प्रतिनिधिगण।

गई। पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुई मौखिक प्रस्तुतियों ने प्रतिभागियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर किया। कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता तथा मूल्यांकन डॉ. डीपी कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया ने किया।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. देवदत्त

शेप और डॉ. आर. शिवचिदंबरम द्वारा किया गया।

यह सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला ज्ञान-विनिमय का प्रभावी मंच सिद्ध हुई और ‘एक स्वास्थ्य, एक विश्व’ के व्यापक विषय के अंतर्गत वैश्विक स्तरों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ किया।

Presented in Garhwal Post Newspaper



# सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।



सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

जापान व भारत के शोधार्थियों ने आपदाओं और स्वास्थ्य चुनौतियों पर रखे विचार



**रुड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

**रुड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।



पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुए मौखिक प्रस्तुतिकरण प्रतिभागियों की वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और शोध दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण रहे।



कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता और मूल्यांकन डॉ. जी. पी. कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम का सफल समन्वयन डॉ. देवदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिदेबरम ने किया।

Presented on: <https://www.shrisangamnews.in/Home/NewsDetails/513>





"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर आयोजित होने वाली चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सीबीआरआई रुड़की की ओर से आयोजित सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में उपस्थित विज्ञानी और प्रतिभागी • सागर-संस्थान

## आपदाओं से जुड़ी समस्याओं और संभावित समाधानों को किया प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मंगलवार को सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शीर्षक "एक विश्व, अनेक संकट" रहा। 20 नवंबर को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ होगा।

सीबीआरआई रुड़की परिसर में सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में टीक्यो विश्वविद्यालय, जापान, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान चार्ट पर बनाई गई

कलाकृतियों के माध्यम से विचारों और शोध को प्रदर्शित किया गया। जिसमें भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और विभिन्न आपदाओं से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। सम्मेलन पूर्व कार्यशाला सत्रों की अध्यक्षता एवं प्रस्तुतियों का मूल्यांकन डा. डीपी कानूनगो और डा. अजय चौरसिया व समन्वयन डा. देबदत्त घोष और डा. आर शिव चिदंबरम ने किया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजन सचिव एवं संस्थान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने बताया कि कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान को एक मंच के रूप में कार्य किया।

Presented in Sabhar Sansthan Newspaper



## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 के दूसरे दिन प्री-कॉन्फ्रेंस छात्र कार्यशाला का आयोजन

- भारत और जापान के छात्रों और प्रोफेसर्स ने एक व्यावहारिक संरचनात्मक इंजीनियरिंग कार्यशाला में भाग लिया।
- सात टीमों ने "भवन और पुल" विषय पर काम किया, जिसका मार्गदर्शन सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों ने किया।

प्रतिष्ठित तिथि: 19 NOV 2025 7:32PM by PIB Dehradun

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 कार्यक्रम के दूसरे दिन सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में एक उल्लेखनीय प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें भारत और जापान के युवा प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल 23 छात्रों और टीकों विश्वविद्यालय, टीको टेकी (जापान), टीआईटी टी राज, एनआईटी उत्तराखंड, सीआईआर विश्वविद्यालय तथा अकादमी ऑफ साइंटिफिक एंड इन्वेंशिव रिसर्च (एसआईआर) सहित विभिन्न संस्थानों के चार प्रोफेसर्स ने हिस्सा लिया।



कार्यशाला के लिए छात्रों को सात टीमों में विभाजित किया गया, जिन्हें "बिल्डिंग्स एंड ब्रिज्स" की थीम पर कार्य करना था। प्रतिभागियों का उत्साह और ऊर्जा पूरे रात्र को बेहद रोचक और सहयोगात्मक बनाते रहे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों—डॉ. डी. पी. कानूंगो, डॉ. अजय चौरासिया (आयोजन सचिव), डॉ. देवदत्ता घोष और डॉ. आर. शिवा चिदंबरम (प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला समन्वयक)—ने छात्रों से सलाह दी और भवन डिजाइन, पुल संरचनाओं तथा आधुनिक अवसंरचना से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए।



डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देवदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिजाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देवदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिजाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।



इन विचार-विमर्शों के बाद छात्रों की टीमों ने अपने-अपने स्क्वयरल मॉडल तैयार किए, जिन्हें बाद में महत्वपूर्ण लोडिंग परिस्थितियों के तहत परीक्षण किया गया। यह कार्यशाला अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच साबित हुई और छात्रों को स्क्वयरल इंजीनियरिंग में नवाचारपूर्ण विचारों को खोजने के लिए प्रेरित किया।

(रिलीज़ आईडी: 2191825) आगतक पटल : 17  
इस विज्ञापन को इन भाषाओं में पढ़ें: English

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191825>

## CSIR-CBRI Roorkee Hosts Second Day of "One Health, One World 2025"

- Students and professors from India and Japan participated in a hands-on structural engineering workshop.
- Seven student teams worked on the theme "Buildings and Bridges," guided by senior CSIR-CBRI experts.

प्रकाशित तिथि: 19 NOV 2025 7:19PM by PIB Dehradun

The second day of the OHOW 2025 program at CSIR-CBRI Roorkee was marked by an engaging pre-conference workshop that brought together young minds from India and Japan. A total of 23 students and four professors from University of Tokyo, Tokyo Denki from Japan, TIET Punjab, NIT Uttarakhand, COER University, AcSIR from India participated in the event.



For the workshop, the students were divided into seven teams, working on the theme "Buildings and Bridges." The energy and excitement among the participants made the session lively and collaborative.

Senior experts from CSIR-CBRI interacted with the students, including Dr. D.P. Kanungo, and Dr. Ajay Chourasia (Organising Secretary), Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram (Co-ordinators of Pre-Conference Workshop). They discussed various ideas related to building design, bridge structures, and modern infrastructure.



Dr. Ajay Chourasia welcomed all the students and professors, sharing insights about the program and the importance of understanding structural concepts. Dr. D.P. Kanungo also addressed the students. He highlighted the significance of infrastructure development in today's world.

As a warm gesture, Dr. Ajay Chourasia presented roses to all the participants. Later, Dr. R. Siva Chidambaram and Dr. Debdutta Ghosh provided technical guidance on buildings and bridges, explaining practical aspects such as design approach used in building and bridge structures.

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191817>

# CSIR-CBRI in the Limelight | 18.11.2025



Presented in Dainik Jagran Newspaper



Presented in Garhwal Post Newspaper



## सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव ( आईआईएसएफ ) 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

○ इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से संपृद्धि: आव्यनिर्भर भारत है ○आईआईएसएफ 2025 का अध्येय वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ○ 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ

प्रधान मंत्री मोदी जी का संबोधन (सीएसआईआर-सीबीआरआई) का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।



सीएसआईआर-सीबीआरआई के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से संपृद्धि: आव्यनिर्भर भारत है। कार्यक्रम के उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है। कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है। कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।

Presented in local Newspaper

देहरादून, मंगलवार 18 नवंबर 2025 दैनिक कलम का दायित्व पृष्ठ 7

## CBRI , रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

सीएसआईआर-सीबीआरआई के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से संपृद्धि: आव्यनिर्भर भारत है। कार्यक्रम के उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है। कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है। कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Science is not only for laboratories but also the foundation of national development, self-reliance and sustainable development: CBR Roorkee hosted the curtain raiser program for India International Science Festival 2025

Vo.No.22 Issue No. 48 Date:- 18-11-2025 RNI No. UTTUR/2024/14529

## صحافت

SAHAFAAT URDU DAILY, DEHRADUN  
Published From DEHRADUN, Lucknow, Delhi & Mumbai

سائنس صرف تجربہ گاہوں کیلئے نہیں بل کہ قومی ترقی اور پائیدار ترقی کی بنیاد ہے

سی سی آر آئی: رورکے میں انڈیا انٹرنیشنل سائنس فیسٹیول 2025 کا کٹین ریزر پروگرام کی میزبانی

سی سی آر آئی: رورکے میں انڈیا انٹرنیشنل سائنس فیسٹیول 2025 کا کٹین ریزر پروگرام کی میزبانی

Presented in Sahafat urdu daily Newspaper

# नवाचार सोच को बढ़ावा देने पर जोर

## सीबीआरआई में साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेज़र

रुड़की, लोकसत्त।

सीबीआरआई, रुड़की में सोमवार को इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें नवाचारों और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस रहा। इस वर्ष महोत्सव की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत" तय की गई है। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्योग विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है। आईआईएसएफ का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप



इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम शुभारंभ करते अतिथि।

प्रज्वलन और बंदे मातरम से हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि विज्ञान राष्ट्र की प्रगति और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

सीबीआरआई के वरिष्ठ

वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी की उपस्थिति कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रही। डॉ. कानूनगो ने छात्रों को विज्ञान और तकनीक अपनाने तथा देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने खगोल विज्ञान पर सरल और रोचक व्याख्यान दिया।

Presented in local Newspaper

**कार्यक्रम**

**इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत" है**

## सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

**आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य**  
**वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों,**  
**छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान**  
**संकाशों और नीति-निर्माताओं को**  
**एक मंच पर लाना है**

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। सोएसआईआर-केन्द्रीय धन अनुसंधान संस्थान सोएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आईआईएसएफ 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आगस्टी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का सम्मान पूर्वी विज्ञान मंत्रालय एप्लोरेट, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूटिकल मीटिरोलॉजी आईआईटीएम, पुणे चेइर संस्थान है। आईआईएसएफ बीते 6-9 दिसंबर तक

पॉलिमर विभाग, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कार्बोहाइड्रेट एंड नेचुरल साइंस, देहरादून एवं सत्यम, विज्ञान भारती की संयोजकता में आयोजित होगी।

माइक्रो लिटरेचर से सूक्ष्म, सीप से केटीप विज्ञान नं. 1 तथा बत विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने प्रमुख सदस्यों के साथ उत्सवपूर्ण भाग लिया। डॉ. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मान्य के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान आईआईएसएफ इस दुर्लभता को दूरित है जिससे विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि रस को प्रति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है।

सोएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टेन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जनकला एवं सार्वजनिक को बढ़ावा देने वाला माध्यमों को बढ़ावा देने के लिए आईआईएसएफ डॉ. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी, ओएस.

के लिए खोल विज्ञान पर रोचक और प्रेरणादायक व्याख्यान दिया।

उन्होंने वैज्ञानिक विज्ञान से पौष्टिकी के मान्य, खगोल विज्ञान की आश्चर्यजनक, सेस एवं दूरबीनों के विकास, मानव सरोर, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विज्ञान भारती और IISF के निमित्त के को ने भी जानकारी दी। व्याख्यान के उपरान्त डॉ. रतुड़ी का सम्मान डॉ. पी. कानूनगो द्वारा मेमेरेटे पेट कर किया गया।

इसके अतिरिक्त सोएसआईआर-सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सीमा मैरी द्वारा "बिलियन मीटिरोलॉजी के विकास हेतु अखंड उपस्थिति विभाग पर व्याख्यान दिया गया प्रदूषण एवं क्लाइमेट चेंज के को के मान्य पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. पी. कानूनगो, डॉ. चंचल, डॉ. अरवि पांडे, राशि, रानीश, तथा, अरुण, कु. शंकर, कु. लाल, कु. संकुति आदि उपस्थित थे।

Presented in Hindustan Newspaper



## CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."
- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee, CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6-9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser,



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.





Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashli, Kumari Sanskriti etc.

Published: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45>

Home / राज्य / उत्तराखंड

## Uttarakhand : CBRI Roorkee Hosts Curtain Raiser of India International Science Festival 2025



YUGVARTA NEWS

Lucknow, 17 Nov, 2025 08:00 PM



**Roorkee :** Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 was held at CSIR-CBRI, Roorkee on 17 November 2025 at the RNT Auditorium.

This year, the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year's theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated along with faculty members.

Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories but is the foundation of national prosperity, innovation, and sustainable development. He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology, and the limitless spirit of innovation that defines our nation.

Dr. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr. Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy to encourage scientific interest among students. He discussed the primary importance of physics, the relevance of astronomy, evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology, and the use of astronomy to navigate the night sky. He also informed attendees about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as India stands at the crossroads of rapid technological transformations, the nation needs innovators who can solve real-world challenges—from climate issues to healthcare, agriculture, and digital transformation.

**Published in :** <https://yugvartanews.com/state/uttrakhand/post/uttarakhand-CBRI-Roorkee-Hosts-Curtain-Raiser-of-India-International-Science-Festival-2025-3754>



Ministry of Science &amp; Technology



## CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."
- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.



Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashmi, Kumari Sanskriti etc.

(रिलीज़ आईडी: 2190888) आगंतुक पटल : 18  
इस विज्ञापन को इन भाषाओं में पढ़ें: Hindi\_Ddn

[illegible]



# विज्ञान से समृद्धि' थीम के साथ आईआईएसएफ 2025 का आगाज़

by cradmin | November 17, 2025 | 0 | 43


[Home](#)
[राष्ट्रीय](#)
[अन्तर्राष्ट्रीय](#)
[उत्तराखंड](#)
[राजनीति](#)
[अपराध](#)
[जीवन शैली](#)
[More](#)

NOVEMBER 18, 2025



**देहरादून/रुड़की।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में संपन्न हुआ। इस वर्ष महोत्सव की थीम “विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत” निर्धारित की गई है। आईआईएसएफ 2025 का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इस वर्ष विज्ञान महोत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम के साथ हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आईआईएसएफ की थीम और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महोत्सव का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान कर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देना है।

कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी (प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टीट्यूट, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती) की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 एवं बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में शामिल हुए।

डॉ. कानूनगो ने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने भौतिकी की भूमिका, दूरबीनों के विकास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, साइंस सफारी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बदलते तकनीकी युग में भारत को ऐसे नवोन्मेषकों की आवश्यकता है, जो जलवायु, स्वास्थ्य, कृषि एवं डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत कर सकें।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती ने “बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता” विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण कम करने तथा कार्बन फुटप्रिंट घटाने पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. हेमलता ने आभार व्यक्त किया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम उपरान्त विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया। साथ ही हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की प्रयोगशालाओं एवं प्रदर्शनी गैलरी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में डॉ. पी. सी. थपलियाल, विनीत सेनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिरुद्ध पाइन, राजेंद्र, रजनीश, रजत, अनुज, कु. इकरा, कु. राशी एवं कु. संस्कृति सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।



Home /

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

Uttarakhand News

## सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

👤 Admin - Er. Kapil Garg (B.E. Electronics)

🕒 November 17, 2025



कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज़, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि, नवाचार और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें भारत की आत्मनिर्भरता में योगदानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह उत्सव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की असीम भावना का उत्सव है। आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टेन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।



**PIB DDN**-सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। आईआईएसएफ 2025 दिनांक 6-9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम “विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत है”। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता, ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

Published in : <https://galaxyinformer.com/archives/34373>

## CSIR-CBRI in the Limelight | 08.11.2025



विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

### विज्ञान 2.0 के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई में बाल दिवस पर उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था।
- विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा।

Posted On: 14 NOV 2025 10:25PM by PIB Dehradun

सीएसआईआर-सीबीआरआई में आयोजित कार्यक्रम (सीबीआरआई), कर्नाटकी ने एनएसआईआई द्वारा संचालित विज्ञान 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (टीएनई) आयोजित कर बाल दिवस मनाया। यह कार्यक्रम राजकीय इंटर कॉलेज, पुरवाली, मुजफ्फरनगर की विद्यार्थियों के गेजट में आए 125 विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार की आवश्यकता को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना, तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था, जिसका उद्देश्य युवा नवाचारकर्तों अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने है।



कार्यक्रम की शुरुआत वरिष्ठ प्रमाण वैज्ञानिक एवं विज्ञान 2.0 के नोडल अधिकारी डॉ. गौरव जैन के स्वागत कलम से हुई, जिसके बाद प्रधान वैज्ञानिक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. संदन सहाय मीना ने छात्रों को सीएसआईआर-सीबीआरआई की सोच, दृष्टि और समाजोपयोगी योगदानों से अवगत कराया। इस अवसर पर निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने बढ़ती वैश्वीकरण और सीमित संसाधन अवसरों के संदर्भ में उद्यमिता जागरूकता के महत्व पर प्रभाव डालते हुए छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं की पहचान करने, नवाचारपूर्ण विचार विकसित करने तथा 'मेक इन इंडिया' जैसी राष्ट्रीय पहलों के अनुसरण उन्हें व्यावहारिक उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि उद्यमिता रचनात्मक सोच, जोखिम उठाने की क्षमता, नेतृत्व गुण, समझ समझाने की क्षमता और समझ व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देती है, जिससे युवा आमनिर्भर और अभिमानपूर्ण बनते हैं। व्यवस्थित तरीके से पहले विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया, जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा और यह समझा कि वैज्ञानिक अनुसंधान समाज के विकास में कैसे योगदान देता है। तकनीकी छात्रों में 'भारत के उद्यमिता एवं स्टार्टअप इकोसिस्टम का परिचय'-इनोवेशन, उद्यमिता एवं स्टार्टअप की समझ तथा 'समाजस पहचान, समाधान निर्माण, स्टार्टअप कैसे शुरू करें और सफलता की कहानी' शामिल थी।



अवसरान श्री सिद्धांत कुमार नायक (प्रोफाइल मैनेजर, टीआईआईएस, आईआईटी रुड़की), श्री गौरव दीक्षित (सीईओ एवं संस्थापक, गोहम) और डॉ. विजय शर्मा (मैनेजर, टीआईआईएस, आईआईटी रुड़की) द्वारा प्रदान किए गए, विद्यार्थी नवाचार समर्पण प्रणालियों, इनोवेशन अवसरों और स्टार्टअप यात्रा के व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। कार्यक्रम का समापन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अश्विष शिवाल और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. लक्ष्मी अलम के धन्यवाद शब्दों के साथ हुआ। संपूर्ण आयोजन ने वैज्ञानिक सीख, नवाचार जागरूकता और व्यावहारिक अनुभव का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत किया, जिसने विद्यार्थियों को रचनात्मक सोच और समाजोपयोगी समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर राजनीश कुमार, मोहित नयाल, संस्कृति शर्मा, इकना, अनुज कुमार, मंजीत कुमार, अमलव, अजय कुमार, रवि कुमार, विकास कुमार और राधेश कुमार भी उपस्थित रहे।

Published in : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190247>

## CSIR-CBRI in the Limelight | 07.11.2025

## क्विक रीड

### छात्रों को दिया एडवांस सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण



प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राएं।

रुड़की, 6 नवम्बर (अनिल): सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) रुड़की में सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्कल इनिशिएटिव कार्यक्रम के तहत कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की गहन जानकारी देना था। प्रशिक्षण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन सीखा। तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ टीम कृतिका राजे, शारजेद और हिमांशु अग्रवाल ने किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper





Share
Copy url
Save
Font Size A+
D'load Image
Image
Text
Listen

## छात्रों को सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण दिया

**रुड़की, कार्यालय संवाददाता।** सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई) ने गुरुवार को सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के तहत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की।

इसमें लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की समझ को

**■ सीबीआरआई के प्रशिक्षण में 40 छात्रों ने किया प्रतिभाग**

सुदृढ़ करना और वैज्ञानिक सिद्धांतों व व्यावहारिक प्रयोगों के बीच संबंध स्थापित करना था। उद्घाटन सत्र में सीबीआरआई के हेड डॉ. नीरज जैन ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को निखारने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। कॉम्प्लेक्स इंडिया की विशेषज्ञ टीम ने तकनीकी सत्रों का संचालन किया और प्रतिभागियों को

प्रायोगिक अभ्यासों के जरिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम ने किया।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आधुनिक सिमुलेशन टूल्स अपनाकर युवा शोधकर्ता नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सीबीआरआई और कॉम्प्लेक्स टीम के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Presented in Hindustan Newspaper

### सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के अंतर्गत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

**रुड़की (आफताब खान वरिष्ठ विशेष संवाददाता)।** सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स एक जटिल-परंपरा सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्प्लेक्स सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।



तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृतिका राजे (एक्ज़िक्यूटिव इंजीनियर), श्री शारजद (सोनियर एक्ज़िक्यूटिव इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान

डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्प्लेक्स जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें। कार्यक्रम का समापन एक

संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर-सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्प्लेक्स टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इकरा, रजत, अमजुद, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper



अंतरराष्ट्रीय

राज्य

टेक्नोलॉजी

ट्रेवल

राष्ट्रीय

लोकल न्यूज़

स्वास्थ्य

LIVE TV

CONTACT

उत्तराखंड

## रुड़की द्वारा “सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव”



By Sahara Live News

NOV 6, 2025



CSIR-CBRI, Roorkee Organizes Training Program on COMSOL Multiphysics Software under CSIR Integrated Skill Initiative  
Roorkee, November 6, 2025:

The CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, organized a one-day training program on COMSOL Multiphysics software on 6th October 2025 under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The workshop aimed to strengthen the participants' understanding of multiphysics modeling and computational simulation, bridging scientific theory with practical applications. COMSOL Multiphysics is a general-purpose simulation software widely used for modelling, design, and analysis in engineering, scientific research, education, and industry. Around 40 students from various universities participated in the program and received hands-on training in computational modelling using the COMSOL environment.

The technical sessions were conducted by the COMSOL Multiphysics India Pvt Ltd team — Ms. Kritika Raj (Applications Engineer), Mr. Sharjeed (Senior Applications Engineer), and Mr. Himanshu Agrawal (Technical Sales Engineer) — who demonstrated the software's key features and guided the participants through interactive simulation exercises.

The program was coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, CSIR-CBRI. During the inaugural session, Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, outlined the objectives of the CSIR Integrated Skill Initiative, emphasizing the importance of enhancing technical capabilities through hands-on learning. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, encouraged participants to adopt modern simulation tools like COMSOL to support innovation, design optimization, and research-oriented learning.

The program concluded with an interactive discussion and highly positive feedback from the participants, reflecting CSIR-CBRI's ongoing commitment to promoting technical excellence, capacity building, and advanced skill development through the CSIR Integrated Skill Initiative Program.

The training was effectively coordinated with the cooperation of the COMSOL Team, and dedicated support from CBRI staff members — Rashli, Iqra, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, whose efforts ensured the successful execution of the event.

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा “सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव” के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 नवंबर 2025:

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करके तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक जनरल-पुर्पे सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, डिजाइन एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संवादन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंजिनियरिंग डॉट कॉम — सुषी कुटिका राजे (एप्लिकेशंस इंजीनियर), श्री शार्जेद (सीनियर एप्लिकेशंस इंजीनियर), श्री हिमंशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से समर्थन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अभियान को प्रोत्साहित कर सकें।

कार्यक्रम का समापन एक संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर-सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संवादन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इकरा, राजत, अमज़द, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।





🏠 अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उद्घरण

## School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee



By Sahara Live News

© OCT 27, 2025



Roorkee, October 2025:

CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Billing's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR-CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

"Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.



## उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

जागरण संवाददाता, रुड़की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित एईओएन ईटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन कंसल्टेंट्स एलएलपी के मैनेजिंग पार्टनर आशीष राखेजा, डा. पीके दास, प्रो. भूपिंदर सिंह, प्रो.



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी • सागर-संस्थान

राजशेखर, डा. केएस कुलकर्णी और इंजीनियर अस्वथी ने व्याख्यान के माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी अवधारणाओं, पर्यावरण अनुकूल निर्माण और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर जानकारी दी। साथ ही आधुनिक आवासीय निर्माण के नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और संभावित समाधानों के बारे में जागरूक किया। इस दौरान आवास पर केंद्रित एक वीडियो प्रदर्शित किया गया। जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय

अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहीं पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने शहरी और ग्रामीण आवास, टिकाऊ निर्माण, ऊर्जा कुशल तकनीक, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डा. मिक्की दलबेहरा, डा. ताबिश आलम, डा. नवीन निशांत आर्किटेक्ट अनूप, डा. चंदन स्वरूप मीणा, डा. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

## टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

■ विश्व आवास दिवस पर सीबीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 अक्टूबर (अनिल): विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रासंगिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण



कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की

चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, इंजीनियर अस्वथी और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीरज जैन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

## सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper

CCM

N/A

## सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह: डॉ. पेम्मासानी

### सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह: डॉ. पेम्मासानी

- देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन
- पीएमवाई-3 (ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत



मालखर लमाखर लोख

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते डॉ. पेम्मासानी।

डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा कि ग्रामीणों को सस्ते और प्रामाणिक आवास का अधिकार है। यह प्रयोग न केवल तकनीक का प्रतीक है, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक है, जहां आवास सरल, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण

(पीएमवाई-जी) को उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पुरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों को आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है। 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला

सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासयोजनाएं तैयार की हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षयशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गुना शीघ्रता प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वस्थ भारत मिशन के अंतर्गत परिवर्णनीय जीवन शैली में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर उन्होंने 'स्वास्थ्य-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की संस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह

Activat  
Gita S

Published in Dainik Bhaskar

## देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

### देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

केंद्रीय राज्य मंत्री डा पेम्मासानी ने सीबीआरआई का किया दौरा

अलाख सागरदास रुड़की: केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं संस्कार राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमवाई-जी) के तहत देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पीएमवाई-जी के तहत श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण घर सरकार के 'विकसित भारत @ 2047' के लक्ष्यों को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उपवास को केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं संस्कार राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सीबीआरआई रुड़की का दौरा किया। उन्होंने श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते हुए कहा कि आवास और ग्रामीण विकास के साथ ही ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा। यह प्रयोग न केवल तकनीक का प्रतीक है, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक है, जहां आवास सरल, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमवाई-जी) को उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पुरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों को आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है। 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला



डा. पेम्मासानी ने कहा, आवास न केवल आवास को बनाने से बल्कि ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सीबीआरआई रुड़की के टेक्निकल ऑफिस में बनाया गया 3डी प्रिंटेड घर का फोटो

समाधान विकसित करने में सीबीआरआई-सीबीआरआई को भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के 'वेगदूरी' को उजागर किया। जैसे कि ग्रामीण विकास प्रकॉन का फल संकलन, जो अब 250 से अधिक आपदा-प्रतिरोधी आवास घरों का डिजिटल भंडार बन गया है। वे-प्रिंट-घर-बनाओ संकलन तकनीक को स्वस्थ भारत मिशन के तहत चर्च करीब से अधिक ग्रामीण परिवारों में खसू किया गया है। उन्होंने जन-शासिका मंडल पलस्तर और अन्य कम-लागत उपकरणों का उल्लेख किया। उन्होंने सीबीआरआई में पूर्ण-संलग्न भूकन और अर्ध-परिष्कारण सुविधाओं की सराहना की। इसके बाद उन्होंने डा. मिथिला शर्मा की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया। उन्होंने प्रधान विज्ञानी डा. चंदर शर्मा की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया।

Published in Rashtriya Sahara



## देश की पहली 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

## देश की पहली 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

■ ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया।

■ पीएमएवाई(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत 2.87 करोड़ पूर्ण

■ केंद्रीय मंत्री ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास पुस्तक का भी किया विमोचन

देहरादून/रुड़की(एसएनबी)। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो परंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संवोधित करते हुए डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊपर उपलब्ध करने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। यह 3डी प्रिंटेड घर केवल



3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर। तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील

और पर्यावरण-अनुकूल होगा। डा. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 बड़े वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 को कमी आई है और 72 घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआरसीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

# Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

## Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

PIONEER NEWS SERVICE ■ Roorkee

The union Minister of State for Rural Development, Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) here on Wednesday.

Speaking on the occasion, Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology but they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana - Gramin (PMAY-G) the union minister said that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He informed that independent assessments show a 17 per cent rise in household incomes, 14 per cent decline in hospital visits

and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over five crore rural households to live with dignity

ments culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the State.

The union minister urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

"Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India," he said.

Senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the ministry of Rural Development, social organisations and students attended the programme.



under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand', which docu-

# कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

## कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

न्यूज वायरस नेटवर्क

रुड़की 02 अक्टूबर : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह वैज्ञानिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे विषय का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ते, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि

- डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन
- पीएमएवाई-जी (ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा
- केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन
- पीएमएवाई-जी के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आगहन

योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकड़ों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के खेगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन

तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गुना सौंपालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की संस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील



आवासीय परंपराओं का संकलन है।

विषय की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करे, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार खेपे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा -

"विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दुर्लभ से जेड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।"

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।



# डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

सुमित तिवारी / उत्तराखंड प्रहरी  
ब्यूरो

**रुड़की।** ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, “कच्ची दीवारों से उडी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये उडी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण



(पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-

रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने “रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास” नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती उडी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ताकिक वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा – “विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।” उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

# रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

## रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

अमर हिन्दुस्तान  
रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर सीबीआरआई रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल



तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे पवित्र का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण पीएमएवाई की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है

और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासांनी ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। पवित्र की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किसानों की 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे

ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तथवीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि विकास केवल भवन बनाने तक सीमित नहीं है। बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

Published in Amar Hindustan



# Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

## Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

- From Mud Walls to 3D Printing: CBRI Pioneers Affordable Homes for Rural India : Dr. Pemmasani
- Over 3.85 crore houses sanctioned and 2.87 crore completed under PMAY-G, bringing dignity and security to crores of rural families
- CBRI develops 250 region-specific, disaster-resilient housing designs; innovates non-erodible mud plaster, low-cost strengthening techniques, and two-pit pour-flush toilets under Swachh Bharat Mission
- Book "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand" released by Union Minister
- Call for piloting 100 cost-effective 3D printed houses under PMAY-G

**Roorkee (The Hawk):** Union Minister of State for Rural Development, Dr. Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana-



Gramin (PMAY-G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr. Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women,

strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr. Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over

5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr.

Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in The Hawk





# اجراء رسم کا کتاب رہائش، دیہی میں اتراکھنڈ درکش رو

## ’رودرکش-اتراکھنڈ میں دیہی رہائش‘ کتاب کا رسم اجراء

ڈاکٹر عیسائی چندر شیکھر نے CBRI-CSIR، روڑکی میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا



روڑکی: دیہی ترقی کے وزیر مملکت ڈاکٹر عیسائی چندر شیکھر نے آج روڑکی کے سنٹرل ہڈنگ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ (CBRI-CSIR) میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا۔ یہ تاریخی اختراع ہندوستان کے دیہی رہائشی سٹر میں ایک اہم لمحے کی نشاندہی کرتی ہے، جو روایتی طرز کو جدید ٹیکنالوجی کے ساتھ مربوط کرتی ہے۔ سائنسدانوں، محققین، اور اسٹیک ہولڈرز

سے زیادہ دیہی خاندانوں کو سوجھ بھارت مہم کے تحت پادکار زندگی گزارنے کے قابل بنایا ہے۔ اس موقع پر مرکزی وزیر مملکت ڈاکٹر عیسائی نے کتاب ’رودرکش - اتراکھنڈ میں دیہی رہائش‘ کا بھی اجراء کیا جو ریاست اتراکھنڈ کی ثقافتی طور پر بڑی ہوئی، پائیدار، اور آب و ہوا سے متعلق حساس باؤسنگ روایات کو مرعوب کرتی ہے۔ مستقبل کی سمت پر زور دیتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے CBRI پر زور دیا کہ وہ 100 سستی 3D پرنٹ شدہ مکانات کا پائلٹ پروجیکٹ کرے تاکہ دیہی ہندوستان کے لیے اس ٹیکنالوجی کی فروغ دینی کا مظاہرہ کیا جاسکے۔ انہوں نے انسٹی ٹیوٹ پر زور دیا کہ وہ قومی سکون، قابل تجدید توانائی کے انتظام، آب و ہوا کے لیے پلکار ڈیزائن، اور مہم کی ترقی پر توجہ مرکوز کرے تاکہ سائنسی ایجادات سے دیہی خاندانوں کو براہ راست فائدہ پہنچ سکے۔ اپنے خطاب کو ختم کرتے ہوئے، انہوں نے کہا، ’ترقی صرف مکانات بنانے کے بارے میں نہیں ہے، بلکہ ایسے گھروں کی تعمیر کے بارے میں ہے جو روشنی، دھار اور خود انحصاری سے بھرے ہوں۔ CBRI-CSIR کے سینئر سائنسدان، IIT روڑکی کے تکنیکی ممبران، دیہی ترقی کی وزارت کے نمائندے، سماجی تنظیموں اور طلباء نے افتتاحی تقریب میں شرکت کی۔

مکانات کو منظوری دی گئی ہے اور 28.7 ملین مل ہو چکے ہیں۔ آزادانہ جائزوں سے دیہی گھریلو آمدنی میں 17 فیصد اضافہ، پچھانوں میں داخل ہونے میں 14 فیصد کمی اور 72 فیصد گھروں کی ملکیت خواتین کی ہے، جس سے خواتین کی بااختیاریت اور خاندانی بہبود کو تقویت ملی ہے۔ سی آئی آر آئی کے تعاون کی تعریف کرتے ہوئے، انہوں نے کہا کہ انسٹی ٹیوٹ نے 250 علاقائی مخصوص جہاز سے بچتے والے مکانات کے ڈیزائن تیار کیے ہیں۔ مزید برآں، اختراعات جیسے تان رہن یونٹ پلاسٹک، کم لاگت کلب بنانے کی تکنیک، اور نو پٹ ٹوائلٹ سسٹم نے 50 ملین

سے خطاب کرتے ہوئے، ڈاکٹر عیسائی چندر شیکھر نے کہا، ’مٹی کی دیواروں سے لے کر 3D پرنٹنگ تک، ہندوستان نے سب کے لیے محفوظ، مضبوط اور پائیدار مکانات فراہم کرنے کے لیے ایک غیر جزلی عزم کا مظاہرہ کیا ہے۔ یہ 3D پرنٹ شدہ گھر صرف ٹیکنالوجی نہیں ہیں، بلکہ مستقبل کی ایک علامت ہیں، جہاں ایک قابل اعتماد اور قابل اعتماد مستقبل ہے۔ ’وزیر اعظم جتاپرندرمودی کی قیادت میں پروان چڑھتی آواں یو جیٹا گرامین (G-PMAY) کی کامیابیوں پر روشنی ڈالتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے کہا کہ اس انجیم کے تحت اب تک 38.5 ملین

# देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में किया

## देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

नागरिक ज्योति रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्माणक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अद्भुत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर



केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील

पर्यावरण-अनुकूल होगा।" प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजनाग्रामीण (पीएमएवाई-जी)

की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान

स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान को सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकों और रो-गुग्गु शीतलघ प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ

भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रक्षा ख उतराई में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधक डिजाइन और मिट्टी प्रशिक्षण

पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर और ख सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Param Nagrik

## ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

## ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़कर सस्ते, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की दिशा में नई राह दिखाएगा।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने इस उपलब्धि को सराहा। उन्होंने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अद्भुत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही प्रधानमंत्री

आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की सफलताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। उन्होंने स्वतंत्र आकलनों का हवाला देते हुए बताया कि इस योजना से ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण को मजबूती मिली है। डॉ. शेखर ने ग्रामीण आवास में सीएसआईआर-सीबीआरआई के महत्वपूर्ण योगदान को सराहना की। उन्होंने बताया कि संस्थान ने अब तक 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अलावा, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकों और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गुग्गु शीतलघ प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को लाभ मिला है। इस अवसर पर, केंद्रीय राज्य मंत्री ने रक्षा-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।



इस पुस्तक में उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का विस्तृत संकलन है। भविष्य की योजनाओं पर बल देते हुए डॉ. पेम्मासानी ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, ताकि ग्रामीण भारत के

लिए इस अत्याधुनिक तकनीक की व्यावहारिकता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिट्टी प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, जिससे वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि, विकास केवल

मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

Published in Vichar Suchak



# Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI



Published in Garhwal Post

## सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

### सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेमासांनी ने किया देश के पहले ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेमासांनी चन्द्रशेखर ने आज केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. चन्द्रशेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ते और पर्यावरण अनुकूल



होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकर्मियों से यह भी स्पष्ट

मिली है। सीबीआरआई के योगदान को सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासों की योजना तैयार की है। इसके अतिरिक्त गैर-क्षेत्रीय मजबूती तकनीकें और दो-मंजरी सींचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

डॉ. पेमासांनी ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुलक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस

तकनीक को व्यवहार्यता प्रदत्त हो सके। उन्होंने संस्थान की तारीफ अलग, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और विमोचन प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।

उन्होंने कहा कि विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आर्थिकता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत को नींव रख रहे हैं। समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आवास विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttar Ujala

# डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

पीआईबी

देहरादून/रुड़की १ अक्टूबर । ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।" प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण (पीएमएवाईजी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक ३.८५ करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और २.८७ करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों

पीएमएवाईजी (ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा। सीबीआरआई ने विकसित किए 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन; नवाचार में गैर-क्षरणशील मिट्टी की पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली।

केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन।

पीएमएवाईजी-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान।



से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में १७% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में १४% की कमी आई है और ७२% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त,

गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड

राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह १०० किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा ख "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों।" सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत २०४७ की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।



# India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

## India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

Tapan Susheel | TNN

**Roorkee:** India's first 3D concrete-printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee on Wednesday. The prototype, built under the Pradhan Mantri Awas Yojana-Gramin (PMAY-G), was developed to offer a fast, affordable and sustainable housing solution in village settings using advanced construction technology and eco-friendly materials.

Union minister of state for rural development Chandra Sekhar Pemmaseeni, who inaugurated the structure, said it marked a



The 3D printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute

significant milestone in India's rural housing journey. He said the house blends traditional wisdom with cutting-edge science and represents a scalable model that can be replicated in rural India.

► Continued on P 7

Published in Times of India



# Agro-industrial waste used in Roorkee's 3D house

► Continued from P 1

These 3D-printed houses are not merely about technology — they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible," Pemmasani said.

In April 2021, finance minister Nirmala Sitharaman unveiled India's first 3D-printed house at IIT-Madras. Developed by the startup Tvasta Manufacturing Solutions, the 600sqft urban prototype was designed to offer affordable housing for low-income families in cities and was completed in just five days using a proprietary concrete mix. However, that house was not part of any rural housing scheme.

The Roorkee house, by contrast, is the first rural version designed under PMAY-G by scientists at CSIR-CBRI. Unlike the IIT-Madras model, it uses sustainable cement mixes incorporating agro-industrial waste such as fly ash and bagasse ash. It is also aligned with PMAY-G norms for rural homes, which include essential amenities.

Researchers said the prototype demonstrates significant time and cost efficiency. A rural house measuring 25 square metres can be printed in under a week at an estimated cost of Rs 1.8 lakh, compared to four to five months needed for traditional rural

construction. The CBRI model is designed to last over 70 years. "This is the first time 3D printing has been directly applied to rural housing delivery, combining speed, affordability, and green materials for scalable village use," said Dr Ajay Chourasia, chief scientist at CBRI. He led the project along with scientist Ashish Kapoor.

Pemmasani also cited achievements under PMAY-G during PM Narendra Modi's tenure, noting that 3.85 crore houses have been sanctioned so far, with 2.87 crore already completed. He said independent studies have reported a 17% increase in household incomes and a 14% reduction in hospital visits due to better housing. Additionally, 72% of the houses were registered in the names of women, contributing to women's empowerment and family well-being.

He acknowledged CBRI's past innovations, highlighting its development of over 250 region-specific, disaster-resilient housing designs, and rural technologies like non-erodible mud plaster, simple strengthening methods, and the two-pit pour-flush toilet system that benefitted over 5 crore households under Swachh Bharat Mission. "Today's inauguration marks the beginning of its journey into the villages of India," said institute director R Pradeep Kumar.

Published in Times of India

देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

## देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

■ कच्ची दीवारों से उडी  
प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई  
ने ग्रामीण भारत के लिए  
सस्ते घरों की राह दिखाई

रुड़की, 1 अक्टूबर (अनिल) : ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से उडी प्रिंटिंग तक, भारत ने



पुस्तक का विमोचन करते केंद्रीय मंत्री व अन्य।

सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये उडी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती

मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।





[HOME](#)
[जलवायु परिवर्तन](#)
[स्वास्थ्य](#)
[शिक्षा](#)
[विज्ञान](#)
[पर्यावरण](#)
[समाज](#)
[विदेशीय](#)
[विशेष](#)
[संपर्क](#)
[अवसर](#)
[संपर्क](#)

## Roorkee: सीबीआईआई-सीएसआईआई ने मनाया सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस






**रूरकी।** सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस मनाया गया। सीबीआईआई के अध्यक्ष डॉ. एन. एन. शर्मा ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर, डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है। इस अवसर पर, डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है।




सीबीआईआई के अध्यक्ष डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है। इस अवसर पर, डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है।

इस अवसर पर, डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है। इस अवसर पर, डॉ. एन. एन. शर्मा ने कहा कि सीएसआईआई का 84वां स्थापना दिवस है।








Published in: Swatantra Chetna Newspaper

## सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र चेतना  
रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर अडिटोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर, भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवम् संस्थापक निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं को भी रेखांकित किया। इसके पश्चात एक वर्ष के अंतराल में सीएसआईआर-सीबीआरआई की सेवा से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए कर्मिकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान पत्र, शाल और कलाई घड़ी भेंट कर सम्मानित किया गया। साब ही 25 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण



कर चुके कर्मिकों को भी कलाई घड़ी भेंट की गई, इसके उपरान्त मुख्य अतिथि की उपस्थिति में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक ड. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कन्डिशनर और वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण 'ज्ञा त्स्मर्द्ध हस्म दृज रज्य पुणे, महाराष्ट्र को किया गया। यह अभिनव तकनीक, ऊर्जा दक्ष हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान प्रदान करती है तथा स्वच्छ ऊर्जा एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसके पश्चात ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्थापना दिवस आयोजन समिति ने मुख्य अतिथि पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी और कहा कि नई तकनीक भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के

लिए परस्पर सहयोग एवं सकारात्मक सोच तथा प्रेरक वातावरण आवश्यक है। प्रदीप कुमार वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक ने सभी का वन्द्यवाद किया। इस आयोजन समिति के अध्यक्ष ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक रहे। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न और शाल भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एसक के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) आईओटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला चंद्रभानु पटेल, वैज्ञानिकय कांती सोलंकी, वैज्ञानिकय तथा ड. एसके पाणिग्राही, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है। इस-के अतिरिक्त, निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (छम्पूज) और उड़ी क्रेटीट प्रिंट प्रयोगशाला के भ्रमण का संचालन ड. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक, आशीष पिपल, प्रधान वैज्ञानिक, ड. किशोर कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, ड. चंचल सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक और आशीष कपूर वैज्ञानिक द्वारा किया गया, इसके साथ ही, मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी गैलरी का भी भ्रमण किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एक सार्वजनिक संस्था का आयोजन भी किया गया।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper



अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप

कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत्त और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंकरीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik jagran Newspaper



Published in: Rashtriya Sahara Newspaper



# my city

## अमर उजाला

सूर्योदय  
सुबह 6:11  
सूर्यास्त  
राम 6:08  
सकल-विषय सम्पन्न



04

देहरादून | सोमवार | 26  
आरियन रूकन-सप्तमी विक्रम सं  
amarujala.co

# बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए करें स्थायी समाधान

**सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश**

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसी समन्वय से एक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर केंद्र सरकार को भेजें ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करें।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया ने रविवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों का दौरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष

**मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण**

क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी बनाएं प्रस्ताव

डॉ. चौरसिया ने जोर दिया कि हमारी संचालित ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने नदियों के तटबंधों से संबंधित प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिए। साथ ही क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी प्रस्ताव बनाने को कहा ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हों। उन्होंने अधिकारियों को डेटा देने में विशेष सावधानी बरतने और आकलन को उचित श्रेणी में प्रस्तावित करने का निर्देश दिया। संचार व्यवस्था के लिए उन्होंने प्लान बी के तहत भी कार्ययोजना बनाने को कहा। इसके अलावा सीवर, ड्रेनेज और एसटीपी निर्माण से संबंधित कार्यों के लिए भी योजना बनाने के निर्देश दिए गए।

प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सबसेना, रंजर बृजेंद्र दत्त, जिला पर्यटन अधिकारी सुरील नौटियाल आदि मौजूद रहे।



पहाड़ी का निरीक्षण करते सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया। संवाद

### भूस्खलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भीमगोड़ा पुल के पास बार-बार रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और मनसा देवी क्षेत्र में भूस्खलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

कुमार सिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

इस मौके पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, प्रो. डा. गगनदीप, असि. प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा

**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
**हर खबर पर पैनी नजर**

अंतरराष्ट्रीय राज्य टैक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

**राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता**  
By Sahara Live News  
© SEP 26, 2025



इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुड़की तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुड़की के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुंचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान स्थलों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उन्हें भूकंप अभियांत्रिकी, अग्नि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ. हेमलता, श्री नदीम, डॉ. नीरज एवं ओर भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपस्थिति में हुआ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिलक तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अग्निरोधक घरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उन्हें कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन जिज्ञासा, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

Presented in: <https://www.saharalivenews.com/archives/9838>





Published in: Hindustan newspaper

**CSIR-CBRI in the Limelight | 23.09.2025**



# उत्तराखंड-हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

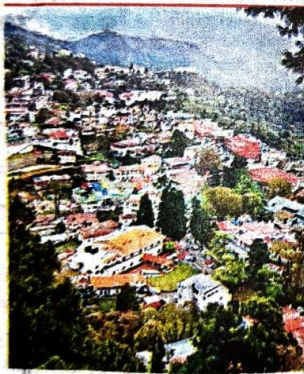
जागरण विशेष

टीम रीडर • जगज्ज

रुड़की: उत्तराखंड के कर्णप्रधान, नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश के कंडावट, टांडा, पंचवटी सहित में एक तिहाई से अधिक इमारतें संरचनात्मक अभियंत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) के मानकों पर खरी नहीं हैं। इनके भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल डिजाइन नहीं किया गया है। इस कारण वे इमारतें उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में हैं, जिनके भूकंपीय घटनाओं के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका रहती है। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चल रहे हैं। यह बात केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के अध्ययन में सामने आई है। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीबीआरआई रुड़की के संरचना अभियंत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर

- उच्च जोखिम वाले इन भवनों के भूकंप के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका
- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के अध्ययन में सामने आई है यह बात



पहाड़ों की रानी मसूरी • जगज्ज आर्याव

डॉ. अजय चौरसिया ने बताया कि जुलाई 2024 से मार्च 2025 के मध्य यह अध्ययन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूकंपीय खतरों का मूल्यांकन,

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट की टीम की ओर से

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रहना जोखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डॉ. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर भूकंपीय क्षेत्र चार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू-गति के प्रति संवेदनशील हैं। ये खड़ी ढलानों, अनियमित विकास और संरचनात्मक अभियंत्रिकी की अनदेखी के कारण अधिक जोखिम भरे हैं। इन छह शहरों में 4,978 इमारतें चिह्नित की गई हैं, जिनमें अप्रबलित विनाई (युआरएम) हैं। इन्हें तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।



सीबीआरआई के मुख्य विज्ञानी डॉ. अजय चौरसिया • छव

रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रभावित शहरों में प्राथमिकता के आधार पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम बने।
- आपातकालीन निवृत्तों और प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल।
- वास्तविक समय भूकंपीय निगरानी प्रणालियाँ।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष रूप से सर्वजनिक और संस्थागत भवनों के रेट्रोफिटिंग को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि खराब जोखिम कम हो।
- सभी नए निर्माणों के लिए अनिवार्य भवन कोड के अनुपालन को लागू करना और पालन करना।
- नगर पालिका नियोजन और जोड़िंग विनियमों में जोखिम संवेदनशीलता मानचित्रों को एकीकृत करना, ताकि जरूरी कदम उठाए जा सकें।
- आपदा प्रतिरोधी केंद्रों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, क्षमता और संरचनात्मक मजबूती जरूरी।
- लचीली निर्माण प्रथाओं और आपदा तैयारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

व्यापक पद्धति विकसित की गई है। संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

Published in: Dainik Jagran newspaper

CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.09.2025



## हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुआ हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में सोमवार से हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हो गया। 6 अक्टूबर तक पखवाड़े का आयोजन होगा। संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो ने किया। इस अवसर पर हिन्दी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राव बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समाप्त पर 6 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण होगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. नवल किशोर बंजारा, अवनोश कुमार, हुमैया अतहर, अरुण महेश्वरी, दिनेश, अमित, भारती आदि उपस्थित रहे।

Published in: Rashtriya sahara newspaper



Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025

Mon. Sep 15th, 2025 12:00 PM

SAHARA लाइव NEWS  
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

**खेल हमारे जीवन का हिस्सा, निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar,**

By Sahara Live News  
SEP 14, 2025

SAHARA LIVE NEWS  
बारिश से उत्तराखंड की ...



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूढ़की में संस्थान परिवार के बीच कबड्डी टीम का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीबीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया:

- टीम-A  
हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, सुरज कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अज़ीम, रजनीश, ए. अरविंद, शुभम, रजनीश
- टीम-B  
दिनेश, मनीष, मोहित, हिमांशु, हरजीत, अमित यादव, सोहन कुमार राय, एन के बंजारा, विपुष, विजेंद्र

मैच का संचालन रेफरी मेहर सिंह द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतिस्पर्धी न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीबीआरआई परिवार ने उत्साहपूर्वक इस खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

इस कार्यक्रम में श्री अमन, श्री अर्पण एवं Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे।

सोनू शर्मा + शुभम बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट केपर मोहित मनीष कुमार, टीम A कप्तान श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री दिनेश विजेता रही , निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित करने के लिए संदेश दिए।

सोनू शर्मा एवं शुभम को बेस्ट डिफेंडर, और बेस्ट केपर मोहित मनीष कुमार, रहे इन टीमों का नेतृत्व।

हिमांशु शर्मा और दिनेश ने किया, निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित करने के लिए संदेश दिए।

आयोजन में डॉ चंदन सरूप मीणा एवं लोक कर्मेटी अमन कुमार ने भी , अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9761>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.



Published in: Rashtriya sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025



□ अंतरराष्ट्रीय राज्य □ टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

### खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI



By Sahara Live News

□ AUG 31, 2025







राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरान्त, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9715>

**CSIR-CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29-31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.**

4 हरिद्वार: दैनिक हाक, शनिवार, 30 अगस्त 2025

रुड़की

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा

**एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को तकनीक हस्तांतरित**

रुड़की (दैनिक हाक): दर्ब को, जब संस्थान द्वारा सीएसआईआर, केन्द्रीय भवन विकसित प्रौद्योगिकी "120 मिन्ट

सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक

श्रीमती बानीश्री नायक, श्रीमती सुरीला वर्मा उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप

संमित करने में मदद करते हैं। अस्पताल, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी इमारतों जैसे महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। विकसित आंशिक रूप से अग्नि अवरोधित दरवाजे का परीक्षण आई एस ओ. 834 मानक ताप चक्र का पालन करते हुए, आईएस 3614:2021 के अनुसार 120 मिन्ट तक किया गया। दरवाजे ने 30 मिन्ट तक आंशिक अग्नि रेंजिंग के मानकों को पूरा किया और पूरे 120 मिन्ट तक अपनी अखंडता और स्थिरता बनाए रखी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की यहामावरी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानुंगो, डॉ. एस. के. पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमति माधवी देवी, एचयू सय्यद, तकनीकी व सॉल्यूशन स्टॉक इत्यादि उपस्थित रहे।



अनुसंधान संस्थान, सीबीआरआई के लिए आंशिक रूप से अग्नि विकसित हुई है। इस अवसर पर कंपनी के नेतृत्व में आग रोधित एकल पल्ले वाला एक प्रशिक्षित तापस दास प्रबंध आग लगने के दौरान लपटों, लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि संचित दरवाजा।" निदेशक, मानस दास निदेशक, खुर्दा और गौरी की गति को

कुमार के कार-कर्मों द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे

Presented in Newspaper: Dainik Hak



Share
Copy url
Save
Font Size A+
D'load Image
Image
Text
Listen

## रुड़की में सीबीआरआई ने बनाया अग्नि अवरोधित विशेष दरवाजा

**रुड़की, संवाददाता।** सीबीआरआई रुड़की ने एमारतों में आग को आपदा को नियंत्रित करने के लिए एक विशेष प्रकार के दरवाजा विकसित किया है। जो किसी इमारत या मकान के कमरे में आग लगने के 2 घंटे तक आग को दरवाजे से बाहर फैलने से रोक सकता है। कमरे में एक हजार डिग्री तापमान होने के बावजूद भी यह दरवाजा कारगर साबित होगा। संस्थान द्वारा शुक्रवार को एसके इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड खुर्दा औद्योगिक एस्टेट ओडिशा को

**02 घंटे तक कमरे से बाहर नहीं फैलेगी आग**

यह तकनीक हस्तांतरित किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है। मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक मानस दास, सुरीला वर्मा उपस्थित रहे। जिन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण की। जिनका हस्तांतरण

सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुँएँ और गर्मी की गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी इमारतों जैसे महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। इस दौरान वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानुंगो, डॉ. एसके पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन आदि मौजूद रहे।

**यह होगा फायदा**

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर किसी मकान के कमरे में आग लग जाती है तो आग की लपटें सबसे पहले दरवाजे या छिड़की से होकर ही बाहर की ओर फैलती है। जिससे की कई बड़ी जनहानि हो जाती है। उन्होंने बताया कि अगर इस दरवाजे को लगा दिया जाए तो करीब 2 घंटे तक कमरे से आग बाहर को नहीं फैलेगी। जिससे आवासीय से इस मकान या इमारत में मौजूद लोग बाहर निकल सके।



रुड़की सीबीआरआई में शुक्रवार को अग्निरोधी एकल पल्ले वाला एक तरह खुर्दा ताप चक्र का संचित दरवाजा का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। • हिन्दुस्तान

Presented in Newspaper: Hindustan



Home / Uncategorized / सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun | Haridwar | Roorkee | Uncategorized

### सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Uk Bharat August 29, 2025



सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- <https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/>

**CSIR-CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.**



**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

### शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुई हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपनी की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9680>

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025



भारत

### TOI DEADLY CLOUDBURST HITS KISHTWAR'S CHISHOTI VILLAGE CAUSING FLASH FLOODS

Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarakash's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? [Go Ad Free Now](#)

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glacial lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- [https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp\\_articleshow/123349265.cms](https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms)

**The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.**



Presented in Newspaper: Dainik Jagran



Presented in Newspaper: Jagran



**जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन**

टीका इंडिया टाइम्स • जगहन



डॉ. अजय चौरसिया • जगहन

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बाढ़ल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डॉ. अजय चौरसिया का।

डॉ. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोक नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष

राहत की पहले से हो तैयारी विज्ञानी डॉ. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कत आती है। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान डॉ. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशोमठ भूधंसव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशोमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। डूनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

**विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल**

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मौके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बृहस्पतिवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेगी। ज्ञात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

**Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.**

की सहायता की गई। कार्यक्रम में अनुभव विपद हुआ।

**SHUSHAM PROPERTIES AND BUILDERS**

Supreme Kumar 88 8888888888

126/1, MIDC, Main Market, Chauri

## CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

### Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorki –CSIR CBRI Roorki published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025)" by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.



Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorki.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorki.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

### Low cost construction technologies book published by cbri researcher.



• The Times Of Suncity

(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorki

CSIR CBRI Roorki published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025)" by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorki.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorki.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorki released a book titled "*Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)*" by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखंड

### Skill Initiative Program.



By Sahara Live News

○ JUL 28, 2025



A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9548>



Published in Hindustan Newspaper



Published in Dainik Jagran

**CSIR-CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.**

**CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025**



# Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi

letters@hindustantimes.com

**NEW DELHI:** Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by

Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Dis-

aster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far.

→PS

Published in Hindustan Times Newspaper

## Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

**New Delhi:** In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a



Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

## हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

अमर उजाला ब्यूरो



नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, अचानक बाढ़ आने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर संघन किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, भूस्खलन और मूसलाधार बारिश की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। इससे राज्य में व्याप्त जनशक्ति, वृद्धिवादी बांधों और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है।

शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एडीएमए), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, भारतीय उष्णदशैष मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, प्रविज्ञानी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के विशेषज्ञों को एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ सहयोग से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल से रहा हालात का जायजा हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञान का इंतजार किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। यह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों की भी लगातार जो आ रही है मदद हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों को सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मोचन निधि से 198.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिस्सेदारी को पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों की आवश्यक राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एडीआरएफ) टोप्स, सेना टोप्स और वायु सेना की तैनाती सहित सभी प्रकार की रासद सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिचय्य को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 17 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये की पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

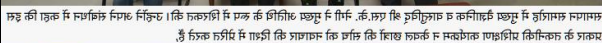
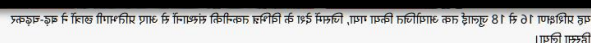
Published in Times New Network Newspaper

Published in Amar Ujala Newspaper

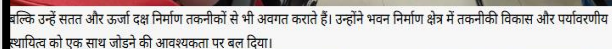
Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.



👤 bahadrabadnews 📅 July 19, 2025 🕒 11:21 am



यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।





ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- <https://bahadrabadnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/>



उत्तराखंड

# "Latest Trends in Building Construction"



By Sahara Live News

🕒 JUL 16, 2025



Three-Day Training Program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, "Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today's youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges." He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI's state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

**Published in :-** <https://www.saharalivenews.com/archives/9509>

**CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.**





## आरिफ निपाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल बिस्निंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दितवस्य प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उत्तराखंड

# डेस्टिनेशन हिमाचल 2025



By Sahara Live News

© JUL 3, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9454>

**From 2<sup>nd</sup>-4<sup>th</sup> July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.**

राष्ट्रीय  
अंतरराष्ट्रीय  
खास खबर  
राजनीति  
लोकतन्त्र  
स्वास्थ्य  
राज्य  
शिक्षा  
एक्सक्लूसिव  
बॉलीवुड

Q Live

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के द्वारे पर पहुंचे।



सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के द्वारे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. धर्माशिला, एस. के. सिंह, डॉ. घंटन स्वरूप मीणा, आशीष विष्णु, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. सीमा चौरसिया उपस्थित रहे। आगंतुक विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, लिक्विफैक्शन प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग लेब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑपन वेल्ड फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: “हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR”।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरदर्शी और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33794>



उत्तराखण्ड

## हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।



By Sahara Live News  
© JUN 28, 2025



सीएसआईआर सीबीआईआई, रुड़की में टीबी, सीएसआईआर और सीविव, टीएसआईआर, भारत सरकार एवं सीविव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन  
रुड़की, 28/06/2025.

सीएसआईआर - सेंट्रल विज्ञान रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआईआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं टीएसआईआर, भारत सरकार की सीविव डॉ. (बीमल) एन. कलाईसेली तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सीविव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के द्वार पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआईआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ वैश्व वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अमर चौधरी, डॉ. टी. पी. कन्नू, डॉ. पी. सी. भट्टाचार्य, एस. के. सिंह, डॉ. वंदन सरस्वती, आशीष शिखर, डॉ. हेमलता, डॉ. हीम गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीना चौधरी उपस्थित रहे। अग्रगण्य विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरसात दीर्घा (Virsat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETP), डीप्रिड फ्लो सुविधा, डिजिटल प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग टेब, अति अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं अंतरिक्ष वेत कवर प्रिंटिंग सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआईआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवन, 12000 फीट की ऊँचाई पर उसके ऊपर उपयोग योग्य solar water heater और तापीय प्रणाली, अति सुरक्षा अभियंत्रण, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARA Project के अंतर्गत तेज-तदास जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित अत्याधुनिक संरचनाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए: "To touch the untouched, to reach the unreachable"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सीविव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-समृद्ध और नवाचार-केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआईआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और अस्पष्ट-क्षेत्रीय भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआईआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रदर्शित करने की आवश्यकता पर बत दिया ताकि उनका लाभ सुदूरदर्शी और अस्पष्ट-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को सुविधा भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9416>

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

### सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किराया और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सके, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो, डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33769>

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखंड

### उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”



By Sahara Live News

© JUN 23, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9387>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

### प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर



By Sahara Live News

© JUN 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासांनी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9345>

**CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.**

## CSIR-CBRI in the Limelight | 05.06.2025

### पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी ज़िम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9334>

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

### स्वच्छता सबका दायित्व 'प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सी बी आर आई



By Sahara Live News

© MAY 15, 2025



"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की फुल स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआईआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएफटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तीना चौरशिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. तीना चौरशिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षारोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआईआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआईआरआई कर्मचारियों और बाबू विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआईआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्यकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के समूहिक प्रयत्नों की सराहना की। उन्होंने स्वतंत्र विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपविष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जैन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उत्कृष्टता प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्लोगन और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मेठी द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बाबू विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आभोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआईआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- <https://www.janmudde.com/archives/33392>

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness.

The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.



## CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

### सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



आरिफ़ नियाज़ी।

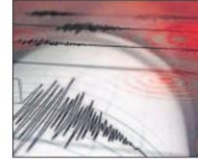
रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

[Published in Jan Mudde E-newspaper](#)

### आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एजुकेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा। कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह



निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संशोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरे जोखिम

क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और पैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इनफिल दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन्स और त्वरित ऑकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया। कार्यक्रम का संपन्न सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिपल, मिनी दलवेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मोना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीवी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी आदि शामिल रहे।

[Published in Hindustan Times](#)

### खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

#### सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स रुड़की (आरिफ़ नियाज़ी) रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को 'खंडहर से लचीलापन' सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण

के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर



सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के पुनर्निर्माण में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति

दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, 'खंडहर से लचीलापन' भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानूनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे। शेष पृष्ठ 2 पर.....

[Published in Golden Times E-newspaper](#)

## ❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

# समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

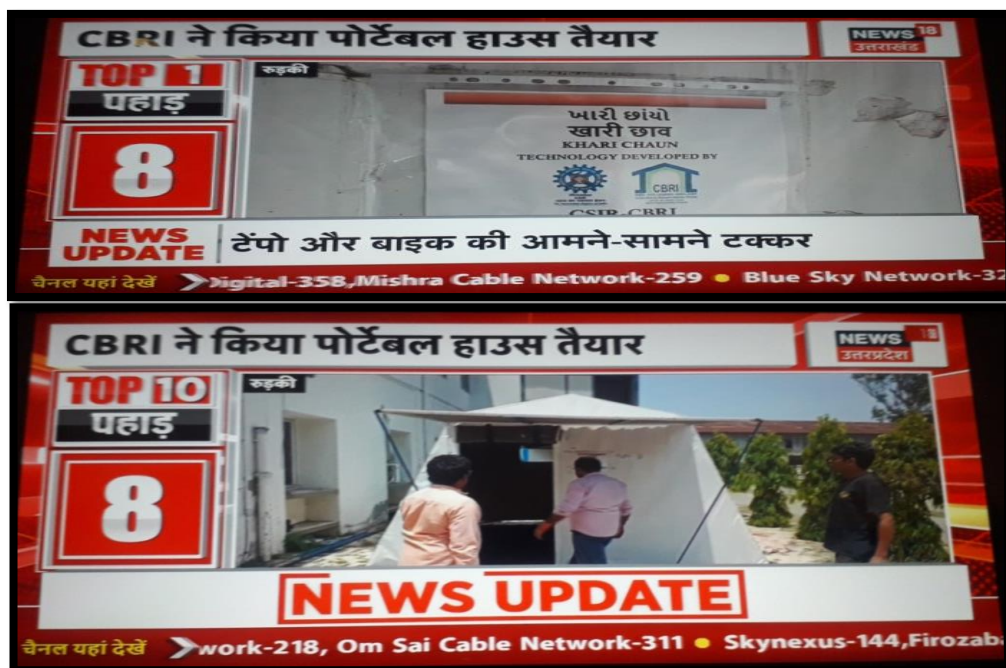
By Sahara Live News  
© MAY 13, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तांतरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव  
रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9252>

### ❖ Television News :-



[Telecasted in News Uttar Pradesh Channel](#)



[Telecasted in Nai Aawaz Channel](#)

Media Clips of a Technical Panel-discussion on “Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake” held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.



## ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

### कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हलित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धत के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए, प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मोघा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। | हिन्दुस्तान



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

## ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

### कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हलित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धत के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिज़ाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए, प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मोघा आदि मौजूद रहे।

Presented in Hindustan Times

- Television clips :-



Television telecast on News 18 Uttar Pradesh





Figure 1

